कलिमे की दावत

मौलाना
मोहम्मद साद कान्धलवी

भाग 1

मुरत्तिब
मौलाना मोहम्मद सिराज अररयावी

Maktabah Ashraf

रहमानिया बुक डिपो नई दिल्ली

कलिमे की दावत

(हिस्सा अव्वल)

जब तक हमारे दर्मियान हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के बयानात नहीं रहेंगे, मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि ख़ुदा की क़सम दावत की सतह बुलन्द न होगी।

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़्द साहब कान्धलवी

Maktabe Ashraf

सर्वाधिकार सुरक्षित

किताब का नाम	:	कलिमे की दावत (भाग–1)
बयान	:	दाई इलल्लाह मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब कान्धलवी
ज़ेरे निगरानी	:	
नज़रे सानी	:	
नाशिर	:	
मत्बा	:	
कम्पोज़िंग		
टाइटल	:	
सफ़हात		108
तादादे किताब	:	1100

Maktabe Ashraf

अस्बाब का मिल जाना भी इम्तिहान
और
अस्बाब से काम बन जाना भी इम्तिहान

इसी किताब में है मौलाना मुहम्मद सअ्द साहब कान्धलवी का वह बयान जो 22.09.2001 को ईदगाह, नई दिल्ली में हुआ।

Maktabe Ashraf

कहाँ पर क्या है

क्या	कहाँ
1. पूरी बात ध्यान से सुनी जाए और पूरी बात दावत में लाइ जाए। बयान : मौलाना मुहम्मद सअ़ूद साहब कांधलवी तारीख़ : 2.11.2001 जगह : रायविन्ड (पाकिस्तान)	5
2. मुबल्लिग़-ए-अव्वल दाई-ए-अव्वल ख़ुद अल्लाह की ज़ात है, अल्लाह तआला ख़ुद कलिमे की दावत दे रहे हैं। बयान : मौलाना मुहम्मद सअ़ूद साहब कांधलवी तारीख़ : 22.09.2001 जगह : ईदगाह, नई दिल्ली	11
3. हम आसानी की दावत हर्गिज़ नहीं देंगे, इस आसानी ने तो काम की सतह बिल्कुल गिरा दी। बयान : मौलाना मुहम्मद सअ़ूद साहब कांधलवी तारीख़ : 14.08.2000 जगह : बंगले वाली मस्जिद, हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली	92

Maktabe Ashraf

بسم اللّٰہ الرحمٰن الرحیم

बयान
मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब कान्धलवी

तारीख़ : 2-11-2001 जगह : रायविन्ड, पाकिस्तान

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّاٰتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुज़ुर्गो! इस वक़्त एक बहुत अहम ज़िम्मेदारी है और वह ज़िम्मेदारी यह है कि बात को ध्यान से सुनना और जो सुना इसको अपनी दावत में लाना, अगर बात ध्यान से न सुनी गयी तो बात दावत में अधूरी आयेगी।

इसलिये बात को ध्यान से सुनना और फिर इसको अपनी दावत में लाना, क्योंकि जो बात दावत में

Maktabe Ashraf

आयेगी वही बात यक़ीन में आयेगी जो बात दावत में नहीं आयेगी वह यक़ीन में नहीं आयेगी और जब यक़ीन में नहीं आयेगी तो वह अ़मल में आ ही नहीं सकती।

दीन के अ़मल में आने का रास्ता यक़ीन है और यक़ीन में आने का रास्ता दावत है।

इसलिये सबसे पहली बात अ़र्ज़ है कि बात को ख़ूब ध्यान के साथ सुना जाये, पूरी बात सुनी जाये और पूरी बात दावत में लायी जाये, क्योंकि दीन ज़िन्दगियों में यक़ीन के रास्ते से आयेगा, मालूमात के रास्ते से नहीं आयेगा और यक़ीन दावत से हासिल होगा। दावत का ख़ास्सा है यक़ीन का पैदा करना।

अभी तक दीन कहने-सुनने में आ रहा है, अभी तक दीन पढ़ने-लिखने में आ रहा है।

जब दीन दावत में आयेगा तो यक़ीन में आयेगा और दीन दावत में जब आयेगा, जब कलिमा "ला इलाह इल्लल्लाह" की हक़ीक़त दावत से हासिल की जायेगी।

इसलिये बात को ध्यान से सुनना है और इसी बात को अपनी दावत और मेहनत में लाना है, क्योंकि जो चीज़ मेहनत में आयेगी वही यक़ीन मे आयेगी।

यक़ीन सबसे पहली शर्त है क्योंकि बग़ैर यक़ीन के वादे पूरे नहीं होते। जब दीन से वादे पूरे होते नज़र नहीं आते तो बावुजूद दीन का इल्म होने के, दीन निगाहों में गिरी हुई चीज़ और ज़हनी तौर पर हल्की चीज़ और माहौल के अन्दर एक रस्मी चीज़ बन जाता

Maktabe Ashraf

है।

दीन से कामयाबी यक़ीन के बक़द्र मिलेगी, इसलिये कि अल्लाह के वादे उसके हुक्मों के साथ हैं और अल्लाह की कुदरत, वादों के साथ है।

अगर अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो आमाल के ज़रीये अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा नहीं मिल सकता, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात-ए-आ़ली से बराहे रास्त इस्तिफ़ाद के लिये।

"कायनात का यक़ीन निकलना शर्त है"

कायनात के यक़ीन के साथ अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाने का कोई रास्ता नहीं, इसलिये सबसे पहले अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम को जो दावत दी गयी है और जो कलिमा देकर भेजा गया है, वह कलिमा "ला इलाह-इल्लल्लाह" है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो, अज़ीज़ो। "यह सबसे बड़ी माया और यह सबसे बड़ी दौलत" जिसको हासिल किये बग़ैर, इन्सानों की हर क़िस्म ज़िल्लत में, परेशानियों में, तक्लीफ़ों में पड़ी हुई है और हमेशा पड़ी रहेगी, वह क़ीमती चीज़ सीखने की ईमान है। कभी उम्मत ज़िल्लत में से बग़ैर ईमान के नहीं निकली।

जितना भी सामान हुआ, जितने भी हथियार हुए उन सबके साथ ज़िल्लत यक़ीनी रही, इज़्ज़त अगर उम्मत को मिली है तो सिर्फ़ ईमान से, इज़्ज़त अगर मिली है तो कलिमे से, इज़्ज़त अगर मिली है तो आमाल से।

लेकिन उम्मत ईमान के बनाने और कलिमे की दावत से इतनी नावाक़िफ़ हो गई है कि गोया ईमान की

Maktabe Ashraf

दावत ईमान वालों के लिए ज़रूरी न रही, बल्कि ईमान की दावत कलिमे की दावत ग़ैरों के लिए समझी जाने लगी। अल्लाह ने कलिमे की दावत पर जिन को जमाया था जिन्हें कलिमे की दावत का मुकल्लफ़ बनाया था, वे ख़ुद ईमान वाले थे।

सबसे बड़ी भूल और चूक यह हुई कि ईमान वालों ने ईमान की दावत, ईमान वालों ने ईमान की मेहनत और ईमान वालों ही ने ईमान के बनाने से ग़फ़्लत बरती।

ईमान वालों ही ने ईमान की दावत छोड़ दी और इस ग़लतफ़हमी में छोड़ दी कि इन्होंने ईमान की दावत को ग़ैरों के लिए समझा, कलिमे की दावत को ग़ैरों के लिए समझा, हालाँकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ुद ईमान वालों से कह रहे हैं कि "ईमान वालो ईमान लाओ"

" या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू" (क़ुरआन)

ईमान वालों से कह रहे हैं ईमान लाओ, काफ़िरों से नहीं कह रहे ईमान लाओ

" या अय्युहल्लज़ीन कफ़रू आमिनू"

यह नहीं कह रहे।

ईमान वालों से कह रहे हैं कि "ऐ वे लोगों जो ईमान लाये हो, वह ईमान जो हमारे यहां मतलूब है, ऐ लोगो इस तरह ईमान लाओ जिस तरह सहाबा किराम ईमान लाये हैं।

"आमिनू कमा आमनन्नासु" (क़ुरआन)

तमाम उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि "नास" से मुराद सहाबा किराम हैं।

Maktabe Ashraf

इस लिए क़यामत तक आने वाले इन्सानों को क़यामत तक आने वाले ईमान वालों को, ईमान-ए-सहाबा की दावत है अल्लाह की तरफ़ से "आमिनू कमा आमनन्नासु" अल्लाह ख़ुद ईमान-ए-सहाबा की दावत दे रहे हैं।

ईमान से ग़फ़लत, तमाम ज़िल्लतों का और परेशानियों का सबसे बड़ा सबब है, इसलिए मेरे दोस्तो! बग़ैर ईमान के जितने भी वादे अल्लाह के अवामिर (हुक्मों) के साथ हैं, वे बग़ैर ईमान के कभी पूरे नहीं होते, यानी बग़ैर ईमान के अल्लाह के वादे कभी पूरे नहीं होते।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जितने भी वादे किये हैं, वे तमाम वादे "आमाल" के साथ हैं, लेकिन उन अमलों पर अल्लाह के वादे जब पूरे होंगे, जब अल्लाह के वादों का उन अमलों पर पूरा होने का यक़ीन होगा, अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो फिर अमल के कर लेने पर वादे पूरे नहीं होते, अमल के इल्म पर भी वादे पूरे नहीं होते कि हाँ, हमें अमल का इल्म है।

"अमल है पर उस अमल पर अल्लाह के बादे पूरे होने का यक़ीन नहीं है तो वह अमल इन्तिहाई रस्मी, वह अमल बेजान, जिस अमल पर अल्लाह के वादों का यक़ीन न हो जिस अमल में एहतिसाब न हो कि अल्लाह इस अमल पर हमें क्या देंगे?

इसलिए मेरे दोस्तो! याद रखें इस बात को सब, जितने भी नये-पुराने हैं कि बग़ैर ईमान के न अमल बन सकता है न बग़ैर ईमान के आमाल पर अज्र मिल

Maktabe Ashraf

सकता है न बग़ैर ईमान के पूरा दीन ज़िन्दगियों में आ सकता है।

ज़िन्दगी में पूरा दीन आने के लिए उस दीन से पूरी कामयाबी लेने के लिए एक ही शर्त है और एक ही रास्ता है कि अल्लाह के वादों का यक़ीन सीखा जाये, ईमान, ईमान की हक़ीक़त के साथ हासिल किया जाये। जब ईमान नहीं होता तो आमाल करने की बहुत सी वुजूहात होती हैं।

या अ़मल करेगा हालात की वजह से या अ़मल करेगा आ़दत की वजह से या अ़मल करेगा ख़्वाहिश की वजह से या अ़मल करेगा माहौल की वजह से या अ़मल करेगा सियासत की वजह से।

इन वुजूहात की वजह से अ़मल करना यह दीन नहीं है बल्कि दीन के साथ खेल है। दीन का तक़ाज़ा यह है कि इसके अन्दर अल्लाह के हुक्म को पूरा करके दुनिया व आख़िरत की कामयाबी का यक़ीन हो यानी अपने दीन से इसे कामयाबी का यक़ीन हो, यह अ़लामत ईमान की हैं। जब ईमान नहीं होगा तो आमाल न ज़ाने किन-किन वुजूहात से किये जायेंगे।

अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में जो रूकावट आयेगी मैं उन रूकावटों की कोई परवाह नहीं करूंगा, क्योंकि रूकावट अल्लाह की तरफ़ से हमें आज़माने के लिए भेजी गयी है मुझे कामयाब करने के लिए, कि इससे हमारी तरबियत भी अल्लाह करेंगे और तरक़्क़ी भी होगी हमारी, ये ज़ाब्ते हैं अल्लाह के करने के। ये ईमान का तक़ाज़ा है ये ईमान की अ़लामत है।

Maktabe Ashraf

जब यह ईमान नहीं रहता मेरे दोस्तो! तो आमाल अन्दर का तकाज़ा नहीं रहते बल्कि वे आमाल माहौल की वजह से या आदत और हालात की वजह से किये जाते हैं इसलिए यह सारी मेहनत ही ईमान बनाने की है।

इस काम की बुनियाद इस काम का मक़सद नबियों की बेअ्सत का मक़सद नबियों की मेहनत की इब्तिदा।

शरीअत तो हर नबी को बाद में मिली, सबसे पहले हर नबी ने कलिमे की दावत दी, अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि "हमने जो नबी भेजा उसको सबसे पहले कलिमे की दावत दी है" बल्कि अल्लाह की तरफ़ से ख़ुद सबसे पहली दावत कलिमे की है:

"इन्ननी अनल्लाहु ला इलाह इल्लल्लाहु फ़अ्बुदूनी"

हर नबी को अल्लाह ने यही दावत दी और फिर इसी दावत को नबियों ने अपनी क़ौमों को दिया, मूसा अलै० को सबसे पहले अल्लाह ख़ुद इसी कलिमे की दावत दे रहे हैं।

बयान

मौलाना मुहम्मद सअ्द साहब कांधलवी

तारीख़ : 22.09.2001

जगह : ईदगाह, नई दिल्ली

मुबल्लिग़े अव्वल दाई-ए-अव्वल ख़ुद अल्लाह की ज़ात है, अल्लाह तआला ख़ुद कलिमे की दावत दे रहे हैं, फिर नबियों से कलिमे की दावत दिलवाई।

जितने भी यक़ीन बिगड़े हुए-हुए, जितने भी अक़ाइद

Maktabe Ashraf

बिगड़े हुए-हुए, जितनी भी जुल्मतों में कौमें पड़ी हुई-हुई, हर नबी ने अपनी इब्तिदा कलिमे से की है।

ये वे कौमें होती थीं, जो क़ौमें पहले ईमान पर थीं जिस नबी की भी कौम हुई, होता यह था कि जब नबी जाते थे तो दावत भी उनके साथ जाती थी, जब दावत गयी तो यक़ीन बिगड़े जब यक़ीन बिगड़े तो आमाल बिगड़े।

फिर आमाल के बिगड़ने पर यक़ीन आमाल से हटकर अस्बाब पर आया फिर अस्बाब के तक़ाज़े की वजह से आमाल बिलकुल छोड़ दिये।

जब दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं रहा करता तब दीन ज़िन्दगियों से निकल जाया करता है यह दीन का हम पर हक़ है कि उससे कामयाबी का यक़ीन हमारे अन्दर हो, हर ज़माने की कारगुज़ारी है यह, यानी हर नबी के ज़माने की यही कारगुज़ारी है कि, नबी आये साथ में कलिमे की दावत लाये तो कलिमे की दावत दीन को ज़िन्दगी में खींच लायी नबी गये साथ में उनके दावत गयी, दावत के जाते ही दीन ज़िन्दगी से निकलना शुरू हो गया। यक़ीन क्या गया दीन को साथ ले गया। इसलिए कि कलिमे की दावत से यक़ीन था और यक़ीन से दीन था, हाँ यक़ीन होगा तो दीन आ जावेगा।

यक़ीन यानी ईमान, दीन यानी इस्लाम, हाँ नबी गये तो दावत गयी, दावत गयी तो ईमान गया, ईमान गया तो इस्लाम भी गया सिर्फ़ इस्लाम की शक्ल रह गयी तो अगले नबी ने आकर फिर उस क़ौम पर मेहनत

Maktabe Ashraf

की, हर दो नबियों के दरमियान का जो वक़्फ़ा होता था, उस वक़्फ़े में दावत के न होने की वजह से क़ौम गुमराह हो जाया करती थी, इसलिए कि ईमान के बनाने का सामान ख़त्म हो गया और ईमान के बनाने का जो सबसे बड़ा यक़ीनी सबब है, "दावत इलल्लाह" वह ख़त्म हो गया।

जब "दावत इलल्लाह" ख़त्म हो गयी तो फिर अल्लाह की ज़ात का यक़ीन भी दिल से निकल गया, ख़त्म हो गया, इसलिए कि यह बात तो यक़ीनी है कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन बनेगा, यह बात तो फ़ितरत में है इन्सान की कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन बनेगा, दावत मुल्क व माल की हो, या दावत अस्बाब की हो, या दावत तिजारतों की हो, या दावत सेहत के लेने में डाक्टरों की हो, या दावत अमन के लेने में हुकूमतों की हो, या दावत हिफ़ाज़त करने में हथियारों की हो, यह बात तो यक़ीनी है कि जिस चीज़ की दावत दी जायेगी उस चीज़ का यक़ीन आयेगा।

ऐसा नहीं हो सकता कि दावत अस्बाब की हो और यक़ीन आमाल का हो और ऐसा कभी नहीं होगा कि दावत अस्बाब की हो और यक़ीन आमाल का हो और ऐसा भी कभी नहीं होगा कि दावत अस्बाब की हो और उन अस्बाब में अल्लाह की मदद आवे, ऐसा क़भी नहीं होगा, अस्बाब के रास्ते अल्लाह की मदद जब आती है जब अस्बाब का यक़ीन निकल जावे।

जब अस्बाब का यक़ीन निकला हुआ होगा तो

Maktabe Ashraf

जितने अस्बाब हमारी राहत के हैं, ग़ैरों के लिए ये हलाकत के अस्बाब बन जावेंगे और ग़ैरों की हलाकत के अस्बाब ईमान वालों के लिए राहत के अस्बाब बना दिये जावेंगे यानी बात ही फिर पलट जावेगी कि अल्लाह ने जितने हलाकत के अस्बाब बनाये हैं वे सारे के सारे अस्बाब, ईमान वालों के लिए राहत में इस्तिमाल होंगे और ईमान वालों के राहत के अस्बाब बातिल के लिए हलाकत में इस्तिमाल होंगे कि अल्लाह तआला यक़ीन वालों के लिए अपनी कुदरत का इस्तिमाल करके अस्बाब की शक्लों को बदल देते हैं कि, लाठी को साँप में बदल देते हैं, आग को बाग़ में बदल देते हैं, उहद में अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ि० की टहनी को तलवार में बदल देते हैं।

तमाम नबियों के साथ जो वाक़िआत हुए, उसमें यही मिलेगा कि यक़ीन वालों के लिए पानी में रास्ते और न मानने वालों के लिए यह पानी हलाकत का ज़रीया।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बनाकर इन्सानों के हाथ में नहीं दे दिये बल्कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बना कर अपनी कुदरत में रखे हैं, उन अस्बाब से ईमान वाले फ़ायदा उठा सकेंगे, अगर ईमान नहीं है तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के ख़ज़ानों से फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता।

क्योंकि अल्लाह के ख़ज़ानों से फ़ायदा उठाने के लिए मेरे दोस्तों कायनात का यक़ीन निकालना शर्त है अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए अस्बाब का यक़ीन निकालना शर्त है।

Maktabe Ashraf

यह बात नहीं है कि अल्लाह ने किसी को दुकान दे दी तो उसे कमाने की कुदरत दे दी या किसी को ज़मीन दे दी तो उसे उगाने की भी कुदरत दे दी या किसी को हथियार दे दिये तो उसके इस्तिमाल पर कुदरत दे दी या किसी को बीवी दे दी तो उसे बच्चा पैदा करने की कुदरत दे दी।

कितने बे औलाद हैं, कितने हैं जो हथियार में परेशान हैं, कितने हैं जो दवाओं से बीमार हैं, कितने हैं जो अस्बाब के होते हुए भी मोहताज हैं, कितने ऐसे मिलेंगे जिनकी दुकान पर क़र्ज़ा उनकी दुकान के सामान से ज़्यादा होगा कि सामान पूरी दुकान का 50,000/- और क़र्ज़ा दुकान पर 75,000/-तो मेरे दोस्तों अल्लाह ने किसी को कुदरत नहीं दी है बल्कि अस्बाब दिये हैं और कुदरत अस्बाब में है ही नहीं, कि कुदरत अस्बाब में हरगिज़ नहीं है, जो यूँ समझे कि अस्बाब में कुदरत है वह तो दुनिया में अस्बाब बनायेगा और जो यक़ीन करेगा की कुदरत अल्लाह की ज़ात में है वह अल्लाह की ज़ात से फ़ायदा उठाने के अस्बाब बनायेगा यानी आमाल बनायगा की अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने का यह रास्ता है कि आमाल बनाओ, अल्लाह की कुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए अस्बाब नहीं हैं कि मैं अल्लाह की कुदरत से ग़ल्ला लेने के लिए ज़मीन बनाँऊ, तो सैलाब आयेगा या सूखा पड़ेगा और मैं अल्लाह की कुदरत से औलाद लेने के लिए बीवी रखूँ तो बाँझ ही रहेगी।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तो! एक है कुदरत को साथ लेना,

Maktabe Ashraf

और एक है अस्बाब को साथ लेना। अस्बाब के साथ लेने में अल्लाह का कोई वादा नहीं, चाहे तो वक़्ती तौर पर काम बना दे, कामयाब करदे फिर हमेशा के लिए नाकाम कर दे, यही बात है कि तुम में से जो दुनिया चाहेगा वह हमेशा के लिए नाकाम होगा और जो आख़िरत चाहेगा हम उसकी दुनिया बनादेंगे, चाहे बक़द्र-ए-ज़रूरत बनायें या चाहे ज़रूरत से ज़्यादा दे दें, जो आख़िरत चाहेगा उसकी दुनिया बन जायेगी और जो दुनिया चाहेगा उसकी आख़िरत बिगड़ेगी।

इसलिए याद रखो मेरे दोस्तो कि अल्लाह की कुदरत अस्बाब में नहीं है और हालात का ताल्लुक़ भी अस्बाब से नहीं है, तो जब न हालात का ताल्लुक़ अस्बाब से है और कुदरत भी अस्बाब में नहीं है तो फिर हमारी मेहनत बेकार है, क्यों बेकार है?

इसलिए बेकार है कि कुदरत हमारे ख़िलाफ़ है, कुदरत अस्बाब बनाने वालों के साथ नहीं होती कि अस्बाव बना लो तो कुदरत साथ हो जाये।

हाँ लोग यही कहते हैं कि तुम पहले अस्बाब बनाओ फिर तुम अल्लाह से दुआ मांगो, उल्टी बात करते हैं अल्लाह को न पहचानने की वजह से ये बिलकुल उल्टी बात करते हैं।

कुरआन के भी ख़िलाफ़, और हदीस के भी ख़िलाफ़ है ये बात कि पहले तुम अस्बाब बनाओ, फिर अल्लाह से दुआ मांगो क्यों? क्योंकि सही बात यह है कि तुम अल्लाह से माँगो उसके देने के ज़ाब्तों के ज़रीए, उसके देने के ज़ाब्ते क्या हैं?

Maktabe Ashraf

"इय्या-क-नअ़बुदु व इय्या-क-नस्तईन"

यह उसके देने का ज़ाब्ला है कि मैं तेरी इबादत करके तुझसे लेता हूँ।

मेरे दोस्तो! एक इस कलिमे के अल्फ़ाज़ हैं, और एक इस कलिमे का इख़्लास है।

कलिमे की दावत कलिमे का इख़्लास हासिल करने के लिये है और हदीस यह बतला रही है कि हराम से क़लिमे के इख़्लास के बग़ैर नहीं बचा जा सकता।

कलिमे का इख़्लास यह है कि यह कलिमा इसे हराम से रोक दे, यह कलिमे का इख़्लास है। कलिमे का इख़्लास कलिमे की दावत से हासिल होगा।

कलिमे की दावत के बारे में मुसलमानों के अन्दर आम ग़लत फ़हमी यह है कि कलिमे की दावत तो ग़ैरों के लिये है हम तो हैं ही कलिमे वाले, यह आम ग़लत फ़हमी है। यह ग़लत फ़हमी इस वजह से पैदा हुई कि ख़ुद ईमान वालों के दरमियान ईमान की दावत ख़त्म हो गयी।

मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिये थी, क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से ईमान लाने का हुक्म ख़ुद ईमान वालों के लिये है:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

और ग़ैरों को दावत, इस्लाम की है, अपनों को दावत ईमान की है। जब ख़ुद ईमान वालों ने ईमान की दावत छोड़ी तो ईमान की हक़ीक़त को हासिल करने और कलिमे की हक़ीक़त को हासिल करने का सामान ख़ुद ईमान वालों में से ख़त्म हो जायेगा।

Maktabe Ashraf

अब तो इस बात की मेहनत की ज़रूरत है कि जिन ईमान वालों को ईमान लाने का हुक्म दिया गया था कि:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

ईमान बालो ईमान लाओ कैसा ईमान लायें,

"आमिनू कमा आमनन्नास"

कि क़यामत तक के आने वाले ईमान वालों को यह अल्लाह की तरफ़ से दावत है कि "ईमान लाओ जैसा ईमान सहाबा-ए-किराम लाये हैं। बड़ी ग़लत फ़हमी यह हुई कि ईमान वालों ने ईमान की दावत को ग़ैरों के लिये समझा, जब कि इनको बनाया था ईमान का दाई मगर ये बन बैठे ईमान के मुद्दई, कि ईमान की दावत तो हो गयी ख़त्म ईमान वालों में से तो इस दावत की जगह दावा आ गया, हाँ सच्ची अ़र्ज़ कर रहा हूँ कि ईमान वालों में ईमान का दावा आ गया।

अब जब ईमान का दावा आया तो हर मुसलमान अपने ईमान से पूरी तरह मुत्मइन हो गया, हालाँकि हक़ीक़त यह है कि जितना ईमान इसके अन्दर आता जायेगा उसी के बक़द्र यह अपने ईमान की तरफ़ से फ़िक्र-मन्द होगा और निफ़ाक़ का ख़ौफ़ इसके अन्दर बढ़ता जायेगा, लेकिन जितना-जितना इसका ईमान कमज़ोर होता जायेगा, उतना ही यह ईमान से बेफ़िक्र रहेगा और अलामात-ए-निफ़ाक़ इसके नज़दीक ख़ूबियाँ बनती जायेगीं।

झूठ बोलना ख़ूबी होगी, ख़यानत करना ख़ूबी होगी, वादा-ख़िलाफ़ी करना ख़ूबी होगी।

Maktabe Ashraf

वादा-ख़िलाफ़ी करने वाले को अक़्लमन्द कहा जायेगा।

यानी सहाबा के ज़माने में जो अ़लामात-ए-निफ़ाक़ थीं वे अ़लामात ईमान वालों के दरमियान ख़ूबियाँ बन जायेंगी।

अबू बकर और हन्ज़ला रज़ि० ने कोई निफ़ाक़ का क़ाम नहीं किया था कि न झूठ बोला न वादा-ख़िलाफ़ी क़ी थी, न ख़्यानत की थी इन दोनों ने इस में से कोई काम नहीं किया था, सिर्फ़ यक़ीन की वह कैफ़ियत जो हुज़ूर सल्ल० के साथ रहने में होती थी, जब वह कैफ़ियत यक़ीन की अपने माहौल में न पायी गयी, तो इस पर यह ख़तरा हुआ कि "हन्ज़ला तू मुनाफ़िक़ हो गया और अबूबकर तू मुनाफ़िक़ हो गया।

मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! हुक्म तो अल्लाह की तरफ़ से यह है कि इतना ईमान लाओ, जितना ईमान सहाबा किराम लाये हैं, लेकिन ईमान की दावत के निकल जाने से कलिमे के बोल का नाम ईमान हो गया, कि यह हराम काम करे और इसको इतना भी एहसास नहीं कि यह हराम है, यह बात नहीं है कि इसको हराम का इल्म नहीं है इसे हराम का इल्म है लेकिन ईमान की सबसे अदना अ़लामत है कि बुराई को दिल से बुरा समझना, हदीस का मफ़्हूम है कि इसके बाद ईमान का कोई ज़र्रा भी इसके अन्दर नहीं बचा।

यह सबसे आख़िरी दर्जा है ईमान का कि एक आदमी गुनाह को गुनाह न समझे, हराम को हराम न समझे तो अब इसके अन्दर ईमान का ज़र्रा भी नहीं

MaktabeAshraf

बचा इसलिये सबसे पहले तो यह सोचना पड़ेगा कि ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिये है, इसी का हुक्म है:

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

ईमान की मज्लिसें अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० ख़ुद ईमान वालों के साथ लगाते थे कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुज़ुर्गो! ईमान ज़र्फ़ है और अह्कामात बहैसियत मज़्रूफ़ के हैं, ज़र्फ़ कहते हैं बर्तन को और मज़्रूफ़ कहते हैं बर्तन में रखी जाने वाली चीज़ को कि जब बर्तन होगा तो चीज़ ज़ाया नहीं होगी अगर ज़र्फ़ से यानी ईमान से ग़फ़्लत है तो बग़ैर बर्तन ईमान के अहकामात से फ़ायदा हासिल नहीं हो सकता क्योंकि बग़ैर ईमान के अल्लाह के वादे पूरे नहीं हो सकते।

आमाल होंगे लेकिन अगर इन आमाल से कामयाबी का यक़ीन नहीं है, तो अस्बाब-आमाल में ग़फ़्लत लायेंगे अस्बाब-आमाल की महरूमी का सबब बनेंगे अगर आमाल से कामयाबी का यक़ीन नहीं आया तो सबसे बड़ा आमाल से महरूमी का जो सबब है, वह अस्बाब का यक़ीन है, इसलिये बुनियादी तौर पर सबसे पहले सहाबा किराम ने ईमान सीखा कि "तअ़ल्लम्नल ईमान क़ब्ल तअ़ल्लम्नल क़ुरआन" हमने ईमान सीखा क़ुरआन सीखने से पहले जब ईमान सीखा तो जो हुक्म जिस वक़्त नाज़िल हुआ, वह सीधा इनके अ़मल में आया, हाँ हुक्म क़िताबों में नहीं आया।

Maktabe Ashraf

मेरे दोस्तो! शरीअत के निफ़ाज़ का सबसे बड़ा सबब हर ईमान वाले का अपना यक़ीन है, हर ईमान वाले पर उसका निगराँ उसका ईमान है कि मेरा अल्लाह मुझको देख रहा है, मेरे अल्लाह ने इस अमल पर यह वादा और इस बदअमली पर ये वईदें उतारी हैं, बग़ैर ईमान के वादे पूरे नहीं हो सकते और न ही एहतिसाब पर अमल ही हो सकता है क्योंकि ईमान के बक़द्र ही एहितसाब आयेगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस अमल पर यह देने वाले हैं और इस अमल के छोड़ने पर ये वईदें हैं, फिर अल्लाह के ख़ज़ानों से सहाबा किराम ने बराहेरास्त किस तरह फ़ायदा उठाया।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को ईमान सिखलाया है, यह ईमान-ईमान की दावत से बनता है लेकिन हुआ यह कि ईमान की दावत ईमान वालों में से निकल गयी, इस ख़्याल से कि हम तो हैं ही ईमान वाले कलिमे की दावत तो दूसरों के लिये है जब कि अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि ईमान वालो ईमान लाओ,

"आमिनू कमा आमनन्नासु"

जैसा ईमान सहाबा किराम लाये हैं, उनके जैसे ईमान लाओ, इसलिये सहाबा वाले ईमान की दावत है और सहाबा वाले ही ईमान की मेहनत है और सहाबा वाला ईमान ही मत्लूब है।

हम अपने ईमान से इसलिये मुत्मइन हैं कि हम अपने आपको ग़ैरों के मुक़ाबले में देख रहे हैं, हालाँकि हमें ईमान की अल्लाह की तरफ़ से जो दावत दी गयी

Maktabe Ashraf

है सहाबा को नमूना बना कर:

"आमिनू कमा आमनन्नासु"

कि ईमान लाओ जैसा सहाबा किराम लाये हैं तो ऐसी मददें, ऐसी नुसरतें और अल्लाह के वादे पूरे होंगे, जो वादे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सहाबा किराम के साथ पूरे किये हैं फिर जो ईमान व यक़ीन इस कैफ़ियत के साथ बनेगा उस पर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने वादों को पूरा फ़रमायेंगे।

क्योंकि अल्लाह के वादे उसके हुक्मों के साथ हैं, और अल्लाह की कुदरत वादों के साथ है, अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है।

अस्बाब तो कुदरत से बने हुए हैं अल्लाह ने अस्बाब बना कर अपनी कुदरत में रखे हैं।

यह बात नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब बना कर इन्सानों के हवाले कर दिये हों, इस वक़्त तो हमने अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब को असल ठहरा लिया है कि ख़ुद ईमान वाले अस्बाब में कामयाबी मांगेंगे।

यह रास्ता नाकामी का है

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की कुदरत ईमान वालों के साथ आमाल पर यक़ीन की शर्त के साथ है।

अल्लाह की कुदरत अस्बाब के साथ नहीं है कि जैसे इस वक़्त अस्बाब बना कर लोग दुआएं मांगते हैं।

ताजिर के ज़हन में यह है कि दुकान बनाना मेरे जिम्मे है इसमे कामयाबी अल्लाह देंगे।

ज़मीनदारों के ज़हन में यह है कि ज़मीन बनाना मेरे

Maktabe Ashraf

ज़िम्मे है इसमें कामयाबी अल्लाह देंगे।

डाक्टरों के ज़हन में यह है कि दवा बनाना और इलाज करना मेरे ज़िम्मे है सेहत और शिफ़ा अल्लाह देंगे।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो जब इन बातों का इन्कार किया जायेगा तो आप लोगों को इन्तिहाई हैरत होगी कि देखो अल्लाह के कामयाब करने के ज़ाब्ते ये अस्बाब नहीं हैं, यह हैरत इस वजह से होगी कि बार-बार इन अस्बाबों को सोचा गया है, बोला गया है, कि अल्लाह ने अस्बाब बनाये हैं अब इन अस्बाब को इख़्तियार करके अल्लाह से इनमें कामयाबी माँग लो, नहीं हरगिज़ नहीं यह रास्ता नहीं है कामयाबी का अल्लाह ने अपने वादे अस्बाब के साथ नहीं किये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जितने अस्बाब बनाये हैं, वे तमाम अस्बाब ईमान वालों के इम्तिहान के लिये हैं, ग़ैरों के इत्मीनान के लिये हैं, अगर दुनिया में कोई सबब न होता तब भी ईमान वाला कहता कि हमारी ज़रूरतों को हमारे अल्लाह पूरा करेंगे कि पालने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह ही की है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बनाये हैं ये सारे अस्बाब कुदरत से बने हैं पर कुदरत को अपनी ज़ात में रखा है, अल्लाह ने कुदरत को अस्बाब बनाने के बाद अस्बाब में रखा नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब बनाये और उसमे कुदरत भी रख दी ऐसा नहीं है।

इसलिये यह बात नहीं है कि अस्बाब बनाना हमारा

काम और इनमें कामयाबी देना अल्लाह का काम बल्कि बात यह कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुक्म को पूरा करना हमारे ज़िम्मे है और कामयाब करना अल्लाह के ज़िम्मे है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब दें या न दें यह उनकी मर्ज़ी है, यह बात नहीं है कि अल्लाह ने अपने ख़ज़ाने से फ़ायदे उठाने के लिये दुनिया का यह कारखाना बना दिया ताजिर के ज़हन में यह है कि दुकान मैं बनाउँगा कामयाब अल्लाह करेंगे।

यही बात चल रही है पूरे आलम में हाँ, हमारे साथी जो दावत इलल्लाह की मेहनत में लगे हुए हैं तो वे भी यही बात चला रहे हैं, मुझे तो ताज्जुब होता है उस वक़्त जब हमारा साथी यूँ कहता है भाई दुनिया दारूल अस्बाब है इसलिये दुकान ज़रूरी है या तिजारत और ज़िराअत ज़रूरी है इसको कर के अल्लाह से कहो वह इस सबब में कामयाबी डाल देंगे, कि इन्सान को अल्लाह ने अस्बाब का मुकल्लफ़ किया है और कामयाबी अल्लाह के हाथ में है पर हरगिज़ यह बात नहीं है, बल्कि मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! अल्लाह के कामयाबी देने के ज़ाब्ते कामयाब करने के ज़ाब्ते, अल्लाह के अहकामात हैं,

"इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तईन"

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को वह यक़ीन सिखलाया था जिस यक़ीन की बुनियाद पर उनका अल्लाह के साथ गुमान, अल्लाह के वादों के एतिबार से था कि अल्लाह का वादा हमारे साथ यह है, अब सहाबा किराम को यक़ीनी अस्बाब सिखला दिये गय।

Maktabe Ashraf

क्या सिखलाया गया? कि जो शख़्स पाँच नमाजों को एहतिराम से पढ़ेगा, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इसकी रिज़्क़ की तंगी दूर कर देंगे, इसकी बीमारियों को रफ़ा कर देंगे, इसको तन्दुरूस्ती अ़ता फ़रमायेंगे, इसके चेहरे को नूरानी बना देंगे, या जिस शख़्स के घर में सूरत वाक़िआ तिलावत होगी तो उस घर में फ़ाक़ा नहीं आयेगा, या जो शख़्स अपने हाथों से सदक़ा करेगा, उसकी बीमारी दूर हो जायेगी, 70 बलाओं और मुसीबतों से महफ़ूज़ रहेगा और जो शख़्स सुबह या शाम यह दुआ पढ़ ले उस पर कोई मुसीबत नहीं आयगी।

अल्लाहुम्म अन्–त रब्बी लाइलाह इल्ला अन्–त अ़लै–क तवक्कलतु व अन्–त रब्बुल अ़र्शिल करीमि माशाअल्लाहु का–न वमा लम यशअ् लम यकुन वला हव्ल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीम० अअ्लमु अन्नल्ला–ह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीरूव् व अन्नल्लाह क़द अहा त बि कुल्लि शैइन इल्मा० अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बि–क मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आख़िज़ुम् बिनासिय–तिहा० इन्न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम''

मेरे मोहतरम दोस्तो–बुज़ुर्गो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ईमान वालों के अस्बाब पर, इनकी जान पर, इनके माल पर जब ये ईमान वाले यक़ीनी अस्बाब सीखेंगे तब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इन्हें आज़माने के लिये इन पर हालात डालेंगे, ये देखने के लिये कि इनका यक़ीन अस्बाब ही पर है या अहकामात पर, अल्लाह तआ़ला ईमान को परखते रहेंगे।

हुज़ूर सल्ल० ईमान के मुअ़ल्लिम भी हैं और ईमान के मुम्तहिन भी हैं।

आप सल्ल० सहाबा को ईमान सिखला भी रहे हैं और उनके ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं।

एक सहाबी का इम्तिहान लिया, हाँ, जिसे ईमान सिखलाया था उसका अब इम्तिहान ले रहे हैं,

"कै फ़ अस बह् त या हारिसतु"

तो हज़रत हारिसा रज़ि० कह रहे हैं:

कि मैं सुबह कर रहा हूँ ईमान की हक़ीक़त के साथ हर चीज़ की कोई अ़लामत होती है, हर दावे की कोई दलील होती है, तो हज़रत हारिसा रज़ि० के जवाब का मुख़्तसर सा ख़ुलासा और मफ़हूम यह है कि मैं अपनी रोज़ी को, अल्लाह के ख़ज़ाने से जो उतर रही है उसमें से पानी के हर क़तरे के साथ, हर खजूर और ग़ल्ले के दाने के साथ जो फ़रिश्ते अल्लाह ने लगा कर भेजे हैं, इनकी आमद को देख रहा हूँ, तो आप सल्ल० ने हज़रत हारिसा रज़ि० से फ़रमाया कि ऐ हारिसा तुमने ईमान की हक़ीक़त को हासिल कर लिया है अब इस पर तुम जमे रहियो।

अब सारी दुनिया आकर यह कहे कि वहाँ यह हुआ, यहाँ वह हुआ, वहाँ आग लगी, वहाँ तुम्हारा मकान जल गया, तो यह यूँ यहाँ पर बैठे हुए कहें कि नहीं मेरा मकान नहीं जला।

मेरे मोहतरम दोस्तो! बात इन ख़बर को लाने वालों के यक़ीन की नहीं है जो आकर ख़बर दे रहे हैं आग लग जाने की, यहाँ पर तो बात ख़बर के सुनने वाले

Maktabe Ashraf

अबूदर्दा रज़ि० की है कि जब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इस दुआ के पढ़ लेने पर वादा किया हुआ है कि नुक़सान नहीं होगा तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मेरा मकान कैसे जला सकते हैं जब कि मैं दुआ पढ़ कर घर से चला था, अल्लाह तो वादा ख़िलाफ़ी करेंगे नहीं, इसलिये मेरा मकान नहीं जल सकता, ऐसा नहीं हो सकता।

क्योंकि वादा ख़िलाफ़ी तो मोहताजगी की दलील है तो मोहताज ख़ालिक़ नहीं हो सकता, मख़्लूक़ मोहताज है, हर वक़्त, हर आन मख़्लूक़-ख़ालिक़ की मोहताज है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो ख़ालिक़ होने की वजह से मोहताजगी से पाक हैं, अल्लाह ने किसी सबब को भी कुदरत से बनाने के बाद कुदरत से ख़ारिज नहीं कर दिया, हर सबब अल्लाह की कुदरत में है, यहाँ मस्अला यह नहीं है कि कहने वाले क्या कह रहे हैं यहाँ तो मस्अला इस बात पर अटकता है कि अल्लाह ने मुझसे जब यह वादा कर लिया है तो हम पर कोई मुसीबत नहीं आयेगी, मेरा मकान फिर कैसे जल सकता है, यह अल्लाह का वादा है, अब अबू दर्दा रज़ि० मकान के जलने की ख़बर देने वालों का यक़ीन कैसे कर लें, अल्लाह तो अपने बन्दे के गुमान के साथ हैं कि जैसा अल्लाह के साथ गुमान है वैसा ही उसके साथ अल्लाह का मामला है।

जब अबू दर्दा रज़ि० का गुमान अल्लाह के वादे पर है, चाहे एक आदमी आकर ख़बर दे या दो आदमी आकर मकान के जलने की ख़बर दें पर इनका गुमान

Maktabe Ashraf

अल्लाह के वादे पर है फिर मकान कैसे जल सकता है।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुजुर्गो! ईमान लुग़त में कहते ही इसी को हैं कि अल्लाह की ख़बरों को मुहम्मद सल्ल० के भरोसे पर यक़ीनी मानना।

"ला इलाह, इल्लल्लाहु, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

इसका तर्जुमा, इसका मतलब हीं यह बनता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० जितनी भी ख़बरें लेकर आये हैं उन सारी ख़बरों को आप सल्ल० के एतिमाद और भरोसे पर यक़ीनी मानना,

"ला इलाह, इल्लल्लाहु-मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

का यह ख़ुलासा है कि आप की लायी हुई सारी ख़बरों को आप के एतिमाद पर यक़ीनी मानना, यह है कलिमा तय्यिब्बा का असल मफ़हूम।

इस यक़ीन को हासिल करना है कलिमे की दावत से, यह यक़ीन कलिमे की दावत से बनेगा, हुज़ूर सल्ल० ने हर सहाबी को कलिमे की दावत पर उठाया था, ईमान की मज्लिसें क़ायम होती थीं।

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुजुर्गो! इस वक़्त जितनी भी मज्लिसें दुनिया में क़ायम हो रही हैं, वे सारी की सारी मज्लिसें अस्बाब की बुनियाद पर, अस्बाब के बनाने पर, अस्बाब के फैलाने पर इन मज्लिसों से न कभी यक़ीन बना है न आइन्दा कभी बनेगा ईमान हासिल करने के लिये तो ईमान की मज्लिसें क़ायम करनी होंगी अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० की तरह इन मज्लिसों में ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे मलाइका के तज़्किरे बर्ज़ख़ के

तीनों सवालों के तज़्किरे अल्लाह के करने के ज़ाब्ते और अल्लाह की कुदरत वादों के साथ है कुदरत अल्लाह की ज़ात में है अल्लाह के वादे हुक्मों के साथ हैं हुक्म को पूरा करना यक़ीन के साथ और यक़ीन के लिये कायनात का यक़ीन निकलना शर्त है।

हर आन हर लम्हा हर मज्लिस की बुनियाद इन्हीं तज़्किरों को करना या हम इसकी दावत दे रहे हों या इन्हीं तज़्किरों को सोच रहे हों, अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा की तरह कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें।

एक सहाबी ने इसकी शिकायत की कि अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा यूँ कहते हैं कि आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें, तो क्या हम ईमान नहीं लाये हैं, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि नहीं यह अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा ईमान के लिये सबको फ़िक्र मन्द कर रहे हैं कि कहीं ईमान से बे फ़िक्र कोई न हो जाये इसलिये ईमान की मज्लिसें लगाता है और ईमान की मज्लिसों को पसंद करता है ये ईमान की मज्लिसें क़ायम की जाती थीं सहाबा के ज़माने में।

क्योंकि मेरे दोस्तो! दावत का ख़ास्सा यक़ीन को पैदा करना है, जब तक इस कलिमे की दावत आम न होगी, उस वक़्त तक इस कलिमे का यक़ीन हासिल नहीं होगा, इसलिये कि कलिमे की दावत अल्लाह के ग़ैर की नफ़ी करती है, कलिमे की दावत अल्लाह की ज़ात से इस बात का तक़ाज़ा करती है जब तक यह कलिमा दावत में नहीं आयेगा, और यह कलिमा मुजाहदे में नहीं आयेगा, उस वक़्त तक कलिमे की हक़ीक़त

Maktabe Ashraf

का हासिल करना मुश्किल है।

इसलिये कि मेहनत में अस्बाब आये हुए हैं, दिलों में अस्बाब का यक़ीन उतरा हुआ है, वह तो जो चीज़ मेहनत में आयेगी, वह चीज़ यक़ीन में आयेगी जो चीज़ दावत में आयेगी वह चीज़ यक़ीन में आयेगी इसलिये कि मुजाहदे से मुकाशफ़ा हुआ करता है, जो चीज़ भी इन्सान की समझ में आती है वह चीज़ उस लाइन के मुजाहदे से समझ में आती है और जो चीज़ समझ में आयेगी तो यही समझ यक़ीन में तब्दील हो जायेगी लेकिन कोई भी चीज़ जब समझ में आनी शुरू होगी तो उसी चीज़ का शक भी आना शुरू होगा यह अलामत है यक़ीन के आने की कि पहले समझ का और शक का आपस में मुक़ाबला होगा अब जितनी ज्यादा कुरबानियों के साथ मुजाहदा किया जायेगा शक दूर होता जायगा और समझ में आयी हुई बात यक़ीन में तब्दील होती रहेगी।

अगर कलिमा " ला इलाह- इल्लल्लाह" की दावत और इसकी लाइन का मुजाहदा नहीं है तो कलिमा

"लाइलाह-इल्लल्लाह"

के अल्फ़ाज़ पर ही इक्तिफ़ा करेंगे, अगर यह ज़बान पर है तो यह अल्फ़ाज़ हैं अगर दिमाग़ में है तो मफ़हूम है अगर कानों में हैं तो यह इसकी आवाज़ है अगर किताबों में है तो यह इसके हुरूफ़ हैं।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुज़ुर्गो! यह कलिमा "लाइलाह इल्लल्लाह" अपने यक़ीन के साथ जब होगा, जब यह दिल के अन्दर दाख़िल हो, जब यह ईमान दिल का

ईमान बनेगा तब यह ईमान तक़्वा लायेगा।

इस ईमान के असरात इसके आज़ा व जवारेह पर पड़ेंगे, इसकी आँख ईमान के एतिबार से देखेगी इसकी ज़बान ईमान के एतिबार से बोलेगी इसके कान ईमान के एतिबार से सुनेंगे इसका दिमाग़ ईमान के एतिबार से सोचेगा इसके हाथ-पैर ईमान के एतिबार से हरकत करेंगे।

जब इसके दिल में यक़ीन न होगा तो इसके आज़ा-जवारेह बावुजूद हराम का इल्म होने के हराम से न रूक पायेंगे, यह बात नहीं है कि उम्मत को हराम-हलाल का इल्म नहीं है पर दिल में यक़ीन न होने की वजह से इसके अन्दर हराम से बचने की ताक़त न होगी, हराम से बचने की कुव्वत न होगी ईमान होने की अलामत ही यह है कि ईमान इसे हराम से रोक दे।

हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में एक सहाबी ने हुज़ूर सल्ल० से एक सहाबी की ग़ीबत की, तो आप ने फ़रमाया कि कुरआन के साथ खेल रहे हो, तो उन सहाबी ने कहा कि नहीं ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० मैं कुरआन से खेल नहीं रहा हूँ मैं तो कुरआन पर ईमान लाया हूँ आपने फ़रमाया! कि वह शख़्स कुरआन पर ईमान नहीं लाया जो शख़्स कुरआन के हराम को अपने अमल से हलाल साबित कर रहा है।

यह बात नहीं है कि हराम के हराम होने का इल्म नहीं है, सवाल तो अमल का है।

मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! इल्म तो सिर्फ़ रहबरी करेगा और

Maktabe Ashraf

अमल यक़ीन कर वावेगा, इल्म रहबरी करेगा, कि यह हलाल है, यह हराम है, यह सुन्नत है, यह बिदअत है यह शिर्क है, यह कुफ़्र है, यह जाइज़ है, यह नाजाइज़ है, लेकिन इसके मुताबिक़ कौन चलायेगा?

यूँ कहें कि वह तो अन्दर की ताक़त, यक़ीन ही है, इस के अलावा कोई कुव्वत नहीं है जो इसके अन्दर शरई अहकाम को नाफ़िज़ करा दे।

मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुज़ुर्गो! हुकूमतों से नहीं शरीअतें चला करतीं वह तो अन्दर का यक़ीन शरीअत का तक़ाज़ा करता है कि मेरा रब मुझसे इस वक़्त यह चाहता है, अव्वल तो यह, कि ईमान वाले से गुनाह होगा नहीं, अगर ईमान वाले से गुनाह होगा तो इसका ईमान इसे गुनाह से पाक कराने के लिये लायेगा।

एक सहाबी थे उनसे ज़िना हो गया तो अपने आप को लाकर ख़ुद पेश किया कि "या रसूलल्लाह" सल्ल० मुझसे ज़िना हो गया आप सल्ल० ने यह सुन कर एक तरफ़ मुंह फेर लिया, वह सहाबी. जिधर हुज़ूर सल्ल० ने चेहरा अपना किया था, अब उस तरफ़ से आये और फिर कहा कि "या रसूलल्लाह" सल्ल० मुझसे ज़िना हो गया है।

लेकिन आप सल्ल० चाह रहे हैं कि किसी तरह बात टल जाये, लेकिन वह सहाबी कह रहे हैं कि मुझसे ज़िना हो गया, तो आप सल्ल० उससे कह रहे हैं कि तुझे क्या मालूम कि ज़िना क्या होता है।

यह सहाबी कह रहे हैं कि मैंने ज़िना कर लिया, यह क्यों ऐसा कह रहे हैं? यह इनके अन्दर का

Maktabe Ashraf

यक़ीन ऐसा करा रहा है कि यहाँ पाक हो जाओगे तो आख़िरत में बच जाओगे।

मेरे दोस्तो! भला किसने देखा था इन सहाबी को ज़िना करते हुऐ अरे वह तो ख़ुद आकर कह रहे हैं। इसी तरह एक चोर हज़रत अ़ली रज़ि० से आकर ख़ुद कह रहा कि अमीरूल मोमिनीन, मैंने ऊँट चुराया है, हज़रत अ़ली ने फ़रमायाः तूने उस ऊँट को अपना समझ के खोला होगा, तो वह चोर कह रहा हैः कि नहीं मैंने चुराया है, दूसरे का समझ कर ही उसे खोला है।

मेरे मोहतरम दोस्तो-बुज़ुर्गो! जब सुबह से शाम तक ईमान की इस तरह दावत दी जाती थी तो अन्दर इस तरह का यक़ीन बना हुआ था, "कि आदमी गुनाह कर के बेचैन होता था"

क्योंकि आप सल्ल० ने फ़रमाया है कि जिस आदमी को नेक अ़मल से ख़ुशी हो और बुरा काम जो उससे हो गया, उसका ग़म हो तो यह उसके ईमान की अ़लामत है, और जिसे नेक काम कर लेने पर ख़ुशी न हो और बुरा काम करके कोई ग़म न हो तो उसके निफ़ाक़ की अ़लामत है वह तो मेरे दोस्तो-अज़ीज़ो-बुज़ुर्गो! हर शख़्स अपने ईमान को ख़ुद नाप सकता है।

अपने आमाल देख ले, अपना यक़ीन देख ले, जब ईमान का माहौल होता है, तो गुनाह हो जाने के बाद गुनाहगार ख़ुद को लाकर पेश करता है, और यह बात नहीं है कि यह चीज़ सहाबा के ज़माने के साथ मख़्सूस थी।

Maktabe Ashraf

इसलिये यह ग़लतफ़हमी है कि हम अस्बाब बनायें और फिर अल्लाह कामयाब करें, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो अस्बाब के बनाने पर उनको कामयाब करेगा जिनको अल्लाह ने अहकामात नहीं दिये और उन्हें भी उनके अस्बाब में तभी तक कामयाब करेगा, जब तक दुनिया में बसने वाले मुसलमानों में ईमान की दावत नहीं आ जाती, जिस दिन मुसलमानों में दावत-ए-हक़ आ जायेगी, कलिमे की दावत आ जावेगी, उसी दिन अल्लाह तआला बातिल को नाकाम करेंगे, यह बात हरगिज़ नहीं कि हम अल्लाह के सामने अस्बाब बनाके पेश करें फिर दुआ माँगें कि ऐ अल्लाह तू इस सबब में कामयाबी डाल दे।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के अस्बाब में कामयाबी डालने की वजह अस्बाब नहीं हैं बल्कि अल्लाह के अस्बाब में कामयाबी डालने की वजह जो है और वादा जो है वह उन अस्बाब में अहकामात का पूरा होना है कि तुम हुक्म को पूरा करो हम कामयाब करेंगे, चाहे अस्बाब देकर कामयाब करें चाहे बराहेरास्त अपनी कुदरत से कामयाब करें मोजिज़ा दिखला के या करामात ज़ाहिर करके कि उम्मती के साथ करामात और नबी के साथ मोजिज़ा यानी ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होना, इसका अस्बाब में कोई दख़ल नहीं है।

ज़ाहिर के ख़िलाफ़ होना, इसका ताल्लुक अल्लाह की कुदरत से है, कुदरत का ताल्लुक वादों के यक़ीन के साथ है। अस्बाब के साथ कुदरत नहीं है, अस्बाब बनाकर भले ही काम न हो यह तो मुमकिन है, लेकिन

Maktabe Ashraf

कुदरत साथ हो और काम न बने यह मुमकिन नहीं है।

इसलिए मेरे बुजुर्गो, दोस्तो! बहुत ठन्डे दिमाग़ से इस को सोचो कि अल्लाह के सामने क्या चीज़ बना कर पेश करनी है। अस्बाब बनाकर दुआएं माँगनी हैं या आमाल बनाकर पेश करके दुआएं मांगनी हैं। मेरे दोस्तो! दुआओं का ताल्लुक़ अस्बाब से नहीं है कि अस्बाब बनाओ फिर दुआ मांगो, दुआ और अस्बाब का कोई जोड़ नहीं है। दुआओं की क़ुबूलियत तो आमाल के साथ है, अस्बाब के साथ नहीं है।

जो लोग ग़ार के अन्दर फंस गये थे और चट्टान ने रास्ता बन्द कर दिया था। तो उनमें से हर एक ने अपना अमल पेश किया, इनमें इबादात का कोई अमल नहीं था एक का अमल अख़्लाक़ का है दूसरे का अमल मामलात का है तीसरे का अमल मुआशरत का है। तीनों ने अपने अमल पेश किये एक ने कहा कि ऐ अल्लाह तेरे ख़ौफ़ की वजह से तुझे ख़ुश करने के लिए मैंने एहसान किया, दूसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह मैं तेरे ख़ौफ़ की वजह से ज़िना से रूका तीसरे ने कहा कि ऐ अल्लाह मैंने तेरी वजह से अपनी बीवी बच्चों के हक़ को पीछे करके अपने वालिदैन का एहतिराम किया, अपनी औलाद के हक़ से मुक़द्दम किया।

तू यहां से हमारे निकलने का रास्ता बना दे और हमें इस मुसीबत से नजात दे दे। इन्होंने अल्लाह के सामने अमल बना कर पेश किये सबब बना कर नहीं पेश किया कि कोई क्रेन बना कर पेश करते कि इस

पत्थर को उठा दे।

नहीं अ़मल बना कर पेश किया है, इन्हीं अ़मलों पर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने बग़ैर किसी ज़ाहिरी शक्ल के बराहेरास्त अपने हुक्म से चट्टान को हटाया, क्योंकि मेरे दोस्तो! जब क़ुदरत साथ होती है तो अल्लाह का अम्र बराहेरास्त आता है फिर अल्लाह से अस्बाब नहीं मांगे जाते हैं, जब यक़ीन बन जाता है तो फ़िर वह अल्लाह से बराहेरास्त माँगता है और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त बराहेरास्त उसकी हाजत को पूरा करते हैं जैसे इब्राहीम अ़लै० के लिए किया।

इब्राहीम अ़लै० के लिए क्या किया?

आग को बराहेरास्त हुक्म दिया कि तू ठण्डी हो जा, यह नहीं कि अल्लाह ने पानी भेजा हो, देखो याद रखना मेरे दोस्तो! जो अस्बाब अल्लाह ने बनाये हैं वे ख़ुद अपने बनाये हुए अस्बाब के भी पाबन्द नहीं हैं। हम यह समझें कि अल्लाह की क़ुदरत नये अस्बाब लायेगी, जो अस्बाब अल्लाह ने हमेशा से बनाये हुए हैं, "हवा और पानी"

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त आज भी उन अस्बाबों के पाबन्द नहीं हैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त तो अस्बाब पर बराहेरास्त अपने हुक्म को इस्तिमाल करते हैं कि फ़िरऔन के खाने और पानी पर बराहेरास्त मेंढक और ख़ून का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया।

सालेह अ़लै० की क़ौम के लिए पहाड़ी पर ऊँटनी का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया आदम अ़लै० की पसली पर बराहेरास्त हव्वा का अम्र इस्तिमाल फ़रमाया।

Maktabe Ashraf

इब्राहीम अलै० के लिए बराहेरास्त आग पर अपना अम्र इस्तिमाल फ़रमाया कि ऐ आग ठन्डी हो जा।

यह नहीं कि उसको ठन्डा करने के लिए पानी लाते या कोई केमिकल लाते, उसको ठन्डा करने के लिए बराहेरास्त अम्र लाये इसकी वजह यह है कि मेरे दोस्तो! यक़ीन वाला अपने और अल्लाह के दर्मियान अस्बाब नहीं रखता, इब्राहीम अलै० ने यह नहीं कहा कि ऐ अल्लाह तू जिब्रील के ज़रीये मेरी मदद करदे, या इसराफ़ील, मीकाईल के ज़रीये मेरी मदद कर दे, या जो समन्दरों का फ़रिश्ता है उसके ज़रीये या हवा के फ़रिश्ते के ज़रीये मेरी मदद कर दे, हाँ यह नहीं कि इब्राहीम अलै० ने अल्लाह से अस्बाब माँगे हों बल्कि यक़ीनी सबब का भी इन्कार किया हाँ यक़ीनी सबब जिब्रील यह बहुत मज़बूत सबब है, लेकिन अल्लाह का ग़ैर है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि बहुत मोतबर सबब है कि जिब्रील अल्लाह के और रसूलों के दर्मियान, यह सफ़ीर हैं, अल्लाह के और नबियों के दर्मियान पैग़ाम पहुंचाने वाले, लेकिन मस्अला यहां यक़ीन का है और मस्अला यहां ईमान के इम्तिहान का है, अल्लाह तआला यहां नबियों का इम्तिहान लेते हैं और अल्लाह तआला नबी के ज़रीये सहाबा का इम्तिहान लेते हैं।

हुज़ूर सल्ल० सहाबा किराम को ईमान सिखला भी रहे हैं और ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं।

आप सल्ल० सहाबा किराम के मुअल्लिम भी हैं

Maktabe Ashraf

और मुम्तहिन भी हैं, आप सल्ल० सहाबा किराम को ईमान सिखला भी रहे हैं और उनके ईमान का इम्तिहान भी ले रहे हैं कि सिखलाना भी आप के ज़िम्मे और उनका इम्तिहान भी लेना आप के ज़िम्मे कि जैसा ईमान हम सिखलाने आये हैं वैसा ईमान है भी या नहीं तो इब्राहीम अलै० का इम्तिहान है अल्लाह की तरफ़ से कि जिब्रील अलै० को इनके पास भेजा कि जाकर पूछो कि क्या चाहते हैं।

मेरे साथ हवा का भी फ़रिश्ता और पानी का भी फ़रिश्ता, अब आप जो चाहें इन्हें हुक्म दें और मैं ख़ुद जिब्रील, तो यह मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से आ सकती है, वरना जिब्रील तो अल्लाह के अलावा किसी की तरफ़ से आ नहीं सकते, यह बात तो यक़ीनी है कि यह मदद तो अल्लाह ही की तरफ़ से आयी है, तो इब्राहीम अलै० ने जिब्रील अमीन से फ़रमाया कि हमें आपकी ज़रूरत नहीं है।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! जब तक अल्लाह का ग़ैर दिलों से निकल नहीं जाता, उस वक़्त तक अल्लाह की क़ुदरत हमारे साथ नहीं हो सकती, अस्बाब का साथ होना यह तो इम्तिहान है, कि अस्बाब का मिल जाना भी इम्तिहान, अस्बाब से काम बन जाना भी इम्तिहान, यह भी नहीं कि इम्तिहान के बाद अस्बाब से काम बनते रहेंगे, अस्बाब तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने इम्तिहान के लिए बनाये हैं। मूसा अलै० के पेट में दर्द भेजा। तो मूसा अलै० ने कहा कि ऐ अल्लाह पेट में दर्द है।

Maktabe Ashraf

तो अल्लाह ने फ़रमाया कि जाओ रैहान इस्तिमाल करो, क्या इस्तिमाल करो रैहान, हाँ रैहान एक दरख़्त की बूटी है, तो मूसा अ़लै० ने रैहान का इस्तिमाल किया तो दर्द चला गया, फिर कुछ दिन बाद दर्द आया पेट में पर हम तो यह समझते हैं कि बीमारियां मेरे अन्दर पैदा होती हैं और शिफ़ा अल्लाह भेजते हैं भूख तो मेरे अन्दर पैदा होती है, खाना अल्लाह भेजते हैं, ख़ौफ़ तो मेरे अन्दर पैदा होता है, अमन अल्लाह भेजते हैं। यह बात नहीं है बल्कि मेरे दोस्तो! जिस तरह अल्लाह के यहां शिफ़ा के ख़ज़ाने हैं उसी तरह बीमारियों के भी ख़ज़ाने हैं, जिस तरह खाने के अल्लाह के यहां ख़ज़ाने हैं उसी तरह भूख के भी वहां ख़ज़ाने हैं, जिस तरह अमन के अल्लाह के यहां ख़ज़ाने हैं उसी तरह ख़ौफ़ के भी ख़ज़ाने हैं। पानी के ख़ज़ाने, हवा के ख़ज़ाने, खुद अल्लाह तआ़ला फ़रमा रहें हैं कि हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने हैं। ऐसा नहीं है कि हाजत तुम्हारे अन्दर पैदा होती हो और उन्हें पूरा करने के ख़ज़ाने हमारे पास हैं।

तो मूसा अ़लै० के पेट में दर्द भेजा फिर कहा जाओ रैहान इस्तिमाल करो, अब रैहान इस्तिमाल किया दर्द चला गया, क्या हुआ कि एक सबब तज्रिबे में आ गया। किस के तज्रिबे में? नबी के तज्रिबे में आ गया कि रैहान से पेट का दर्द चला जाता है। हमने भी तज्रिबे कर-कर ये अस्बाब बनाये हैं, ख़ुदा की क़सम सारा निज़ाम झूठा है। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त तो इम्तिहान के लिए अपनी कुदरत से सबब में कामयाबी

Maktabe Ashraf

दिखलाते हैं, और हर आन हर लम्हा अस्बाब की शक्लों को बदल रहे हैं और उनकी तासीरात को बदल रहे हैं, सारे अतिब्बा, सारे डाक्टर ख़ुदा की क़सम सब धोखे में हैं। सब इम्तिहान में फंसे हुऐ हैं और इनके इम्तिहान से निकलने का कोई रास्ता नहीं सिवाय ईमान की दावत के वरना सब धोखे में फंसे हुए हैं।

मुल्कों में बड़े-बड़े स्टोर दवाओं से भरे पड़े हैं, स्टोर वाले अपनी दवाओं को समन्दर में डालते हैं।

तो क्या हुआ? हुआ यह कि दवा फेल हो गयी, ऐलान हुआ मुल्क भर में कि इस दवा को इस्तिमाल न करो, जो डाक्टर यह दवा बेचेगा उसको भी पकड़ लिया जायेगा। यह क्या बात हुई कि यह दवा तो बहुत इस्तिमाल होती थी, हाँ पर अब यह दवा बहुत मुज़िर है मेरे दोस्तो! अभी हम कुदरत को समझे नहीं हैं, अभी तो हम कुदरत को अस्बाब में समझ रहें हैं कि यह अल्लाह की कुदरत से, वह अल्लाह की कुदरत से, इसमें भी कुदरत, नहीं कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कुदरत अस्बाब में नहीं है, अल्लाह ने कुदरत से अस्बाब बनाये हैं यानी दुनिया की सारी शक्लों को बग़ैर नमूना के बनाया है पर कुदरत को इन शक्लों में अस्बाब में रंखा नहीं है।

तो हमारे तज्रिबात में अस्बाब आते हैं तो हम उन अस्बाब की तरफ़ चलते हैं और कुदरत हमारे ख़िलाफ़ होती है, अगर काम बन गया तो यह अल्लाह की रज़ा की दलील नहीं है कि अल्लाह हमसे राज़ी है, क्योंकि हमारा काम बन गया है, नहीं मेरे दोस्तो! अल्लाह

Maktabe Ashraf

रब्बुल इज़्ज़त नाराज़ होकर ज़्यादा काम बनाते हैं।

दुनिया में इन्सानों के काम नाराज़ होकर ज़्यादा बनाते हैं और राज़ी होकर कम बनाते हैं, इसलिए कि फ़क्र और फ़ाक़े में सहाबा मिलेंगे और खाने-पीने में बातिल मिलेगा, क्योंकि वे न मानने वालों के काम ज़्यादा बनाते हैं और मानने वालों के काम कम बनाते हैं, क्योंकि अल्लाह ने इनके सारे काम जन्नत में बनाने का वादा किया हुआ है।

और काम किनके बनायेंगे? काम उनके बनायेंगे जिनके लिए आख़िरत में कोई नेमत नहीं है। उनके काम दुनिया में बनायेंगे। यहाँ दुनिया में वे ईमान वाले परेशान होंगे जिनका ईमान इन्तिहाई कमज़ोर है वरना ईमान और आमाले सालिहा पर वादा किया है कि दुनिया की ज़िन्दगी भी ख़ुशगवार बनायेंगे, पर कमज़ोर ईमान वाले यूँ कहेंगे कि अल्लाह ने जो बातिल को दिया हुआ है हमें क्यों नहीं दिया जैसे बनी इसराईल ने कहा था कि, "काश हमारे पास भी वह होता जो क़ारून के पास है (क़ुरआन)" तो यक़ीन वाले क्या बोले? यक़ीन वाले बोले कि, "अरे तुम्हारी हलाकत हो यह तुमने क्या कह दिया, अरे अल्लाह की तरफ़ से आख़िरत में मिलने वाला दुनिया से बेहतर है. (क़ुरआन)"

कि अल्लाह सवाब कहाँ देंगे? आख़िरत में, सवाब जन्नत को कहते हैं।

कमज़ोर ईमान वाले दुनिया में तमन्ना करेंगे। क्योंकि हर ज़माने का क़ारून अलग और हर ज़माने में माल

Maktabe Ashraf

की तमन्ना करने वाले भी होंगे, आज भी हैं, बहुत से ईमान वाले बहुत से क्या मेरे दोस्तो! सारे ही ईमान वाले इस ज़माने में, वे भी बेचारे इसी तमन्ना में हैं। बातिल को देख देख कर मुतास्सिर हो रहे हैं, और इसकी तमन्ना कर रहे हैं और जब उनका निज़ाम हलाक हो जाये तो फिर तौबा करें, तौबा भी वे करें जिनमें ईमान हो और जिनमें ईमान न हो वे तावील करें कि यह तो इस वजह से हो गया, यह नहीं समझते कि यह तो अल्लाह का अज़ाब है।

इसलिए मेरे दोस्तो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अस्बाब बनाये तो हैं लेकिन इन्हें अपनी कुदरत में रखा है और अस्बाब इन्सान का सिर्फ़ इम्तिहान हैं कि देखें कि इन्सान किस यक़ीन के साथ इस सबब में लगा और क्या किया, इससे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने नबियों का भी इम्तिहान लिया है ईमान का।

तो मूसा अ़लै० की बात अ़र्ज़ कर रहा था कि वह चले रैहान की तरफ़ रैहान इस्तिमाल किया पेट का दर्द चला गया, फिर कुछ अ़रसे बाद अल्लाह तआ़ला अपनी कुदरत से दोबारा लाये दर्द मूसा अ़लै० को, फिर जब दर्द महसूस हुआ तो चले रैहान की तरफ़।

किसने बतायी थी यह दवा मूसा अ़लै० को?

आ़लिमुल ग़ैब और आ़लिमुल हिकम यानी अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद यह बूटी मूसा अ़लै० को बताई, किसी हकीम या डाक्टर ने नहीं बतायी, तो दोबारा मूसा अ़लै० रैहान की तरफ़ गये और रैहान इस्तिमाल किया कि अल्लाह ने दर्द को जिस्म से दूर करने के लिए

रैहान को बताया ही है, लेकिन शिफ़ा न मिली, तो अब परेशान कि पहले तो इसी से शिफ़ा मिली थी, इस बार शिफ़ा क्यों न मिली, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया! कि ऐ मूसा पहले तो तुम हमारी तरफ़ आये थे फिर हमारे हुक्म की वजह से तुम रैहान की तरफ़ गये थे, इस बार तुम सीधे रैहान की तरफ़ गये।

याद रखना मेरे दोस्तो! अस्बाब अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ ले जायेंगे और ले जा रहे हैं और आमाल हुक्म की तरफ़ ले जायेंगे, हुक्म अल्लाह की ज़ात की तरफ़ ले जायेंगे, हाँ अह्कामात, अल्लाह की ज़ात की तरफ़ ले जायेंगे कि नमाज़ अदा करके अल्लाह से माँगो, हुक्म पूरा करके अल्लाह से माँगो और अस्बाब कहाँ ले जायेंगे?

कि अस्बाब ले जायेंगे तज्रिबात की तरफ़, और तज्रिबे का मतलब यह है कि हमने अल्लाह के ग़ैर से तज्रिबा किया हुआ है कि अल्लाह ने हमें अस्बाब दिये हुए हैं।

नहीं मेरे दोस्तो! बल्कि अल्लाह ने हमें अस्बाब दिये हैं महज़ इम्तिहान के लिए और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अह्कामात दिये हैं महज़ इत्मीनान के लिए, हाँ इत्मीनान के लिए अह्कामात दिये हैं।

"अला बि ज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल कुलूब"

ज़िक्र किसे कहते हैं?

ज़िक्र कहते हैं अल्लाह के अह्कामात को, कि हर इताअत करने वाला ज़ाकिर है, अल्लाह ने हमें क्यों दिये अह्कामात?

Maktabe Ashraf

तो अस्बाब हैं इत्मीनान के लिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब देकर यह देखना चाहते हैं कि अस्बाब के अहकामात के पूरा करने से कामयाबी का यक़ीन है या अस्बाब का यक़ीन है, दुनिया को अल्लाह तआला ने अस्बाब से भर दिया कि अस्बाब का इम्तिहान लेना है, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब लाते हैं इम्तिहान के लिए।

तो इब्राहीम अलै० का बड़ा इम्तिहान बहुत बड़ा इम्तिहान कि इस वक़्त शदीद ज़रूरत है इब्राहीम अलै० को किसी की मदद की क्योंकि आग में डाला जाने वाला है। तो बहुत बड़ा सबब आया जिब्रील का, कि इनसे बड़ी कोई मख़्लूक़ नहीं लेकिन छोटे से छोटा होने के लिए मख़्लूक़ का लफ़्ज़ ही काफ़ी है कि हर चीज़ की ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह की ज़ात और सारी चीज़ें वे मख़्लूक़, तो जिब्रील से बड़ी मख़्लूक़ अल्लाह ने कोई नहीं बनाई, लेकिन क्योंकि जिब्रील मख़्लूक़ है।

मेरे दोस्तो! किसी के क़द से, किसी के बदन से, किसी को लम्बाई-चौड़ाई से कुछ नहीं बनता और न ही कुछ होता है, जो अल्लाह का ग़ैर है वह मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ कभी ख़ालिक़ नहीं बन सकती जो मख़्लूक़ है वह ख़ालिक़ से छोटी है और ख़ालिक़ के मातहत है।

सबसे बड़ी मख़्लूक़ जिब्रील, अल्लाह के ख़ौफ़ से ऐसे हो जाते हैं जैसे वह एक बहुत छोटा परिन्दा होता हैं जिसे दहिया कहते हैं, जिसे पौदा कहते हैं यह बहुत छोटी सी चिड़िया होती है उससे छोटी चिड़िया का कोई

Maktabe Ashraf

साइज़ नहीं होता, सिमट के सुकड़ के अल्लाह के ख़ौफ़ से जिब्रील ऐसे हो जाते हैं और अस्ली हालत तो यह है कि सर अर्श से लगा हुआ है और पैर ज़मीनों के अन्दर हैं और पूरब से पश्चिम तक सारा परो ने घेरा हुआ है, यह हाज़िर हैं कि ऐ इब्राहीम बताओ क्या चाहते हो?

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! जिनके यक़ीन बन जाते हैं ना वे अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब नहीं रखा करते, उनकी निगाह अल्लाह पर बराहेरास्त होती है, तो अल्लाह की तरफ़ से उनकी मदद बराहेरास्त होती है। कि इब्राहीम अलै० ने जब अपने और अल्लाह के दरमियान कोई सबब न रखा, तो अल्लाह ने भी अपने और आग के दरमियान कोई सबब न रखा, पानी को, हवा को, किसी फ़रिश्ते को किसी भी मख़्लूक़ को किसी भी क़िस्म का कोई केमिकल आग बुझाने के लिए इस्तिमाल नहीं फ़रमाया, बल्कि अल्लाह ने अपना अम्र बराहेरास्त इस्तिमाल फ़रमाया।

कि जिन्हें अल्लाह की ज़ात से बराहेरास्त लेना आता है वे अस्बाब से मुस्तग़नी होते हैं।

मेरे दोस्तो! यक़ीन नहीं है इसलिए हमारे और अल्लाह के दरमियान ये अस्बाब ऐसी रूकावट बन गये हैं कि हमारे आमाल पर ग़ालिब आ गये हैं, हाँ आमाल पर अस्बाब ग़ालिब आ गये हैं।

इन अस्बाब की बेड़ियों से और इन अस्बाब के ग़लत यक़ीन से ईमान की दावत के बग़ैर नहीं निकला जा सकता, हर वक़्त मुक़ाबला होगा आमाल और

Maktabe Ashraf

अस्बाब का, मेरे दोस्तो! अस्बाब और आमाल के मुक़ाबले में यक़ीन वाले कामयाब होंगे और यक़ीन तो दावत से बनेगा।

यक़ीन का दावत के सिवा बनने का कोई रास्ता नहीं है क्योंकि दावत का तक़ाज़ा यह है कि ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोले यह तक़ाज़ा है दावत का, कलिमे की दावत ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है।

"ला इलाह इल्लल्लाह" के कलिमे की दावत ज़ाहिर के ख़िलाफ़ है, जितना इसको बोला जायेगा वह ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोला जायेगा और जितना ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोला जायेगा उतना यक़ीन बनेगा, लेकिन हम लोगों का हाल यह है कि हम तो ज़ाहिर के मुताबिक़ बोल रहे हैं कि यह बीमारी यह दवा यह ख़ौफ़ यह हथियार यह परेशानी यह मस्अला यह ओहदा।

यानी अस्बाब फ़ौरन ज़ेहन में आते हैं, मसाइल के लिए क्या कभी ज़हन में आया कि सद्क़ात से ज़्यादा बेहतर अचानक आ जाने वाली मुसीबत को टालने वाली कोई चीज़ नहीं।

एक सहाबी थे उन्होंने अपने मुसल्ले से लेकर बाहर दरवाज़े तक एक रस्सी बांधी हुई थी, वह सहाबी नाबीना थे, इसलिए दरवाज़े तक जाने के लिए एक रहबर चाहिए था तो वह रस्सी उनके रहबर का काम करती थी, मुसल्ले पर पैसे और खाने की चीज़ें रखते थे तो वह मुसल्ले पर से दिरहम उठावें और रस्सी पकड़-पकड़ कर दरवाज़े पर जावें, दरवाज़े पर जाकर यतीम को और मिस्कीन को अपने हाथ से दें तो

Maktabe Ashraf

उनके जवान जवान लड़के थे वे कहते कि अब्बा आप यह काम हम लोगों से क्यों नहीं कराते कि हम लोग तो होते हैं घर में मौजूद, तो आप क्यों तक्लीफ़ उठा कर बाहर आते हैं, आप हम लोगों से कह दिया करें हम लोग दे आया करें।

तो उन सहाबी न अपने बेटों से कहा कि बच्चो तुम नहीं जानते जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि मिस्कीन को अपने हाथ से देना यह अचानक आने वाली बलाओं को, अचानक आने वाली मुसीबतों को, अचानक पेश आने वाले हवादिसात को रोक देता है।

अब क्या है कि हमने तो बीमा कराया हुआ है यह हुकूमत से होने का यक़ीन ऐसा करा रहा है कि इन्सानों का बीमा हो रहा है कि हमने तो बीमा कराया हुआ है, अब तो हम हुकूमत की ज़िम्मेदारी में हैं, मरेगा तो इसके रिश्तेदारों को तो नहीं मिलने को कुछ, ज़िल्लत से धक्के खाये अदालतों के कि हमारा बीमा हुआ था, हालांकि जिसने किसी मिस्कीन को अपने हाथ से सदक़ा किया तो अपना बीमा अल्लाह से करा लिया कि अल्लाह की अमान में है वह, पर मेरे दोस्तो! इसका कोई यक़ीन नहीं, मेरे बुजुर्गो! हमने तो अपने और अल्लाह के दरमियान अस्बाब को समझा हुआ है कि अल्लाह ने हमें दुकान दी हुई है, या अल्लाह ने हमें ज़मीनदारी दी हुई है।

मेरे बुजुर्गो दोस्तो! ओहदे के साथ ज़िल्लत आयेगी, दुकानों के साथ क़र्ज़े आयेंगे, ज़मीनों के साथ सैलाब और टिड्डियाँ आयेंगी, क्योंकि अस्बाब दिये अल्लाह ने,

Maktabe Ashraf

कुदरत साथ नहीं की है, ये अस्बाब नाकामियाँ लेकर आ रहें है।

"अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब देते हैं, देखने वाले कहते हैं कि देखो यह बादल आ रहा है मेरी ज़मीन में बरसेगा लेकिन उन्हें ख़बर नहीं कि इस बादल के अन्दर दर्दनाक अज़ाब है, न मालूम इसमें से पत्थर बरसें या तेज़ाब या न रूकने वाला पानी जिससे सैलाब आ जाये, इन्हें इसकी ख़बर नहीं "यह तो सिर्फ़ बादल देख रहे हैं कि हाँ सबब मिल गया हालांकि कुदरत ख़िलाफ़ है।

वे तो बेचारे अहमक़ बुद्धु हैं जो यूँ समझें कि अल्लाह ने जिसको अस्बाब दिये हैं वह ग़ालिब आ जायेगा, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त एक मिनट में राहत के अस्बाब को हलाकत में तब्दील कर देते हैं, हाँ एक मिनट में कर देते हैं कि इन्सानों की अक्लें हैरान हो जाती हैं कि अरे अभी तो यूँ था अब ऐसा कैसे हो गया।

मेरे दोस्तो! अल्लाह का ग़ैबी निज़ाम तो यक़ीन वालों के साथ होगा, अमल वालों के भी मुवाफ़िक़ नहीं होगा, वह तो यक़ीन वालों के साथ होगा कुदरत और अस्बाब वाले सब हैरान होंगे, क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अस्बाब वालों को उनके तज्रिबात में अपने तआरूफ़ के लिए झूठा कर के दिखलाते हैं।

नबियों को भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपने तआरूफ़ के लिए नबियों को उनके अस्बाब में नाकाम कर देते हैं। हालाँकि वे नबी हैं।

Maktabe Ashraf

सुनो मूसा अ़लै० आग जलाने चले, सफ़र में तन्हा हैं बीवी हमल से है और रात का वक़्त, बीवी को दर्दे ज़ह हो रहा है कि बच्चा होने वाला है, इधर मूसा अ़लै० का हमेशा का तज्रिबा है कि हम चकमाक से आग जलाते हैं, जब आग की ज़रूरत पड़ती है तो पत्थर को रगड़ते हैं पत्थर पर, तो ऐसा करने से चिंगारी निकलती है और आग जल जाती है लेकिन अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जिस दिन मूसा अ़लै० को अपना तआ़रूफ़ कराना चाहा उस दिन आग न जली, जबकि हमेशा ऐसा ही करते थे यानी चकमाक से ही आग जलाते थे पर आग आज न जली।

हमेशा का तज्रिबा, किसका? नबी का तज्रिबा वह आज फ़ेल हो गया, कि आग जलाने के लिए कोशिश करते रहे, जब आदमी अपनी कोशिशों में नाकाम हो जाता है तो वह आसमान ही की तरफ़ देखता है यह हर एक का मिज़ाज है कि जब काम नहीं बनता तो ऊपर देखता है, आसमान की तरफ़।

तो मूसा अ़लै० ने भी निगाह ऊपर उठायी तो सामने आग नज़र आयी तो ख़ुश हुए कि वाह-वाह हो गया काम कि अगर आज चकमाक से आग न जली तो जली जलायी आग मिल गयी। अब चले आग की तरफ़, जब आग के क़रीब पहुंचे तो आग पीछे हटी तो सोचा यह अजीब आग है कि आगे बढ़ो तो यह पीछे हटती है और जब पीछे हटो तो आगे आ जाती है, अजीब आग है यह, तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने अपना तआ़रूफ़ कराने के लिए कि मूसा अ़लै० को

Maktabe Ashraf

नबी बनाना है और नबी बनाकर भेजना है इसलिए अल्लाह ने अपना तआरूफ़ करा दिया।

"इन्ननी अनल्लाहु ला इलाह इल्लल्लाहु फ़अ्बुदूनी"

लेकिन आज उम्मत अस्बाब की पटटी आँखों पर बांधे हुए है आज काम करने वाले साधी ख़ुद तज्रिबात ही पर चल रहे हैं और सच्ची बात तो यह है कि काम करने वालों ही ने अभी तक ईमान के सीखने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ बोलने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ सोचने की ज़ाहिर के ख़िलाफ़ चलने की निय्यत ही नहीं की है बस अस्बाब-अस्बाब-अस्बाब। हम जुड़ रहें हैं मार्कीटों पर हम जुड़ रहे हैं सरमाये दारियों पर, हमने अब तक ईमान के हल्क़ों में जुड़ना शुरू नहीं किया।

इसलिए मेरे दोस्तो! ईमान का दावा नहीं अल्लाह को ईमान की दावत पसन्द है, लेकिन यह इतना बड़ा धोखा लगा मुसलमानों को कि ईमान की दावत ग़ैरों के लिए नहीं ईमान की दावत ख़ुद ईमान वालों के लिए है,

"या अय्युहल्लज़ीन आमनू आमिनू"

कि ईमान वालो ईमान लाओ।

अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० ईमान की मजलिसें मुशरिकीन के साथ नहीं ईमान वालों के साथ लगाते थे।

"इज्लिस बिना आमिनू साअ़तन"

"आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें"

इस ईमान की मजलिस में ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे होते थे। लेकिन आज चार ईमान वाले भी कहीं बैठे हुए ईमान की बातें करते हुए नहीं मिलेंगे, हाँ, इसके

Maktabe Ashraf

अस्बाब, उस्के अस्बाब, इसके जहाज़, उसके राकेट, उसका बम, उसकी तिजारत, उसका मुल्क यानी ख़ुदा की क़सम सुबह से शाम तक इस ज़माने में पूरी दुनिया के अन्दर हर ईमान वाला ईमान के बिगाड़ने की मेहनत में लगा हुआ है।

ईमान कैसे बने? ईमान अस्बाब की बातों से नहीं बना करता, ईमान तो अल्लाह के उस ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे से बनेगा, जिस ग़ैबी निज़ाम के ज़रीये यह सारा ज़ाहिरी निज़ाम टूटना है, मस्जिद से लेकर बाज़ार तक और घरों तक कहीं ईमान के हल्क़े नहीं।

मुझे तो बड़ी हैरत हुई कि मुल्क के सारे पुराने यहां मुल्क के मश्वरे पर जमा हुए थे निज़ामुद्दीन में मैंने कहा कि तुम मस्जिदवार जमाअ़त, मस्जिदवार जमाअ़त कहते रहते हो लेकिन तुम्हें अब तक पता ही नहीं कि मस्जिदवार जमाअ़त किस जड़ी-बूटी का नाम है। किसी मस्जिदवार जमाअ़त का आज तक किसी मस्जिद में ईमान का हलक़ा नहीं है, कि जन्नत के, दोज़ख़ के, क़ब्र के, बर्ज़ख़ के, फ़रिश्तों के, क़ुदरत के, रबूबियत के, ग़ैबी ख़ज़ानों के, अल्लाह के करने के ज़ाब्तों के क्या अस्बाब हैं? उनके करने के क्या ज़ाब्ते हैं कोई मजलिस नहीं किसी मस्जिद में।

कहीं मस्जिद वार जमाअ़त के दस साथी, कहीं बीस साथी, कहीं तीस, कहीं पचास और महाराष्ट्र वालों ने तो बाताया कि हमारे यहां किसी-किसी मस्जिद में सौ-सौ साथी जुड़ते हैं। यह नहीं कि ये मस्जिदवार जमाअ़त के साथी सारे आ़लम के मुसलमानों को उनको

Maktabe Ashraf

कारख़ानों से, दुकानों से, खेतियों से, घरों से निकाल निकाल कर मस्जिद के ईमान के हलक़ों में लाकर ज़ोड़ें वे वहां ईमान की बातें सुनें पर किसी मस्जिद में आज तक ईमान का हलक़ा नहीं है।

तो मैंने कहा उन पुरानों से कि यह तो घरवार जमाअ़त है, कारख़ाने वार जमाअ़त है, दुकानवार जमाअ़त है।

रही मस्जिदवार जमाअ़त तो जिस मस्जिद में ईमान का हलक़ा नहीं तो कैसे यह मस्जिदवार जमाअ़त है यह तो दुकानवार जमाअ़त है, मस्जिदवार जमाअ़त तो यह जब होती जब यह कारख़ानों, दुकानों से, घरों से, खेतियों से और सारे अस्बाबों से निकाल-निकाल कर मस्जिद के ईमान के हलक़ों में मुसलमानों को जोड़ती, तब होती यह मस्जिद वार जमाअ़त।

मुझे तो हैरत है कि बजाय उनको अस्बाब के माहौल से निकाल कर ईमान के हलक़ों में लाने के, यह मस्जिदवार जमाअ़त ख़ुद ही बेचारी अस्बाब के माहौल में जा बैठी, कि आधे घन्टे से एक साथी दुकान पर बैठा हुआ है पूछा तू यहां क्यों बैठा हुआ है कहने लगा मैं यहां ईमान की बात कर रहा हूँ, पूछा कि यहां अस्बाब की जुल्मतों में तेरी ईमान की बातों से यह मुतास्सिर हो जायेगा? या तेरा ईमान ऐसा है कि तू यहां अस्बाब की जुल्मत से मुतास्सिर न हो?

अ़ब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० वे लोगों को जमा करते थे कि आओ बैठो ईमान ले आयें-यह नहीं कि हम तो ईमान लाये हुए हैं ही, अब अ़मल करेंगे, मेरे

दोस्तो! हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा किराम को ईमान की दावत पर उठाया था कलिमे की दावत पर उठाया था। यह नहीं कि कलिमा पढ़ लिया है अब तुम्हारे ऊपर ये आ़माल हैं जाओ इन आ़माल को करते रहना, हर एक को ख़बर थी कि मेरे अपने ईमान में तरक़्क़ी के लिये यह कलिमा दिया गया है इसकी दावत दी गयी है, और हर एक कलिमे का दाई था कि अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए और कोई मुसलमान इस्लाम से निकल न जाये उसके लिए और इस्लाम में आने का रास्ता खोलने के लिये कि सारे अक़्वाम इस्लाम में दाख़िल हों।

मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! पहले तो कलिमे की दावत ईमान वालों में से निकलेगी, फिर ईमान वाले इस्लाम में से निकलेंगे, वाक़ई मैं सच्ची अ़र्ज़ कर रहा हूँ।

सुनो मेरी बात कि इस उम्मत के इर्तिदाद की वजह ही सिर्फ़ यह है कि ईमान वालों ने आपस में ईमान की दावत छोड़ दी। मैं क़सम खा कर कहता हूँ कि जब कलिमे वालों ने कलिमे की दावत छोड़ी तब ईमान वाले इस्लाम से निकले हैं, तो जब भी उम्मत दावत छोड़ेगी रिद्दत आयेगी यक़ीनी बात है जब ईमान वाले ईमान की मेहनत छोड़ेंगे ना, कलिमे की दावत छोड़ देंगे ना तो जो इस्लाम से भागना चाहेगा भाग जायेगा और इस्लाम में आने का रास्ता तंग हो जायेगा सिर्फ़ कलिमे की दावत छूटने से।

मेरे दोस्तो यह मेरा अन्दाज़ा नहीं हक़ीक़त है कोई मुबालग़ा नहीं है यह बात साबित है कि मदीना मुनव्वरा

में सारे आमाल आला दर्जे के थे लेकिन हुज़ूर सल्ल० की वफ़ात पर दावत के अन्दर ज़ौफ़ आया तो फ़ौरन इर्तिदाद आ गया, अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़ौरन मदीने को खाली करने को सोच लियां कि फ़ौरन सब निकल जाओ अबू बक्र रज़ि० रिद्दत का इलाज थे यानी अबू बक्र रज़ि० की दावत की मेहनत, यह बात तो सौ फ़ीसद यक़ीनी है कि जब उम्मत में से कलिमे की दावत निकलेगी तो इर्तिदाद आयेगा।

एक बहुत बड़ी आबादी का इस्लाम में दाख़िल हो जाना मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो-अज़ीज़ो! इतनी बड़ी बात नहीं है जितना अदना से अदना ईमान वाले का इस्लाम से निकल जाना है। एक जाहिल आदमी जो दीन से जाहिल हो सिर्फ़ कलिमा गो है उसे कुछ नहीं आता उसका इस्लाम से निकल जाना, एक बहुत बड़ी ग़ैरों की आबादी का इस्लाम में दाख़िल हो जाना इतना मायने नहीं रखता जितना ईमान वाले का इस्लाम से निकल जाना है।

हज़रत फ़रमाते थे, कि जब उम्मत कलिमे की दावत छोड़ देगी तो फिर उम्मत को दूसरों का दीन भला लगेगा।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! हम सबसे पहले ईमान के हलक़े क़ायम करें, जितने भी हम मस्जिद में जुड़ रहे हैं ना सबसे पहले ईमान के हल्क़े क़ायम करो, आने वालों को मस्जिद के माहौल में कलिमे की दावत दो, मैं सच्ची-सच्ची अर्ज़ करता हूँ कि आमाल की दावत से भी रिद्दत ख़त्म नहीं होगी, रिद्दत सिर्फ़ कलिमे की

Maktabe Ashraf

दावत से ख़त्म होगी, आमाल की दावत से रिद्दत नहीं ख़त्म होगी।

जो पहले दिन का कलिमे का दाई था अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० यह पहले दिन से ईमान के दाई हैं। जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने जब कलिमे को पेश किया तो तीनों तब्क़ात पर पेश किया, सारी इन्सानियत इन ही तीन पर मुश्तमिल है, मर्द औरत, बच्चा। आप सल्ल० ने कलिमे की दावत को एक वक़्त में इन तीनों तब्क़ों पर एक साथ पेश किया कि तीनों को यानी अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ख़दीजतुल कुबरा रज़ि०, अली इब्ने अबू तालिब रज़ि० को उसी वक़्त कलिमे का दाई बना दिया तो अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० पहले ही दिन से कलिमे के दाई थे।

इनके पहले ही दिन की कमाई में 6आदमी हैं। इनमें 5 वे हैं जिन्हें दुनिया में ही जन्नत की बशारत दी गई, ये अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० पहले दाई हैं इस उम्मत के, क्योंकि पहले दिन से दाई थे इसलिए आख़िरी दिन यानी जिस दिन जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० की वफ़ात हुई, वफ़ात के बाद फ़िर बिल्कुल इर्तिदाद का ज़माना और जब इर्तिदाद आया तो उस इर्तिदाद का मुक़ाबला सिर्फ़ अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने अकेले किया सारे सहाबा यहां तक कि हज़रत उमर रज़ि० भी आप सल्ल० की वफ़ात से मुतास्सिर हैं पर अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हिम्मत से काम लिया।

मेरे बुज़ुर्गो-दोस्तो! दाई की सिफ़त यह है कि दाई दीन का नुक़्सान बर्दाश्त नहीं करेगा। पक्की बात है यह

Maktabe Ashraf

कि दीन का नुक़सान हो और अबू बक्र ज़िन्दा रहे ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि दाई दीन का नुक़सान हरगिज़ बर्दाश्त नहीं करेगा।

अब अगर हमारे ज़हनों में यह है कि हम सब दावत का काम कर रहे हैं और हम दाई हैं, तो इसका अन्दाज़ा इससे लगा लो कि आया अपने घर से लेकर आलमी सतह तक जितना दीन का नुक़सान हो रहा है तो इस दीन के नुक़सान से मेरे अन्दर क्या कैफ़ियत है, बाहर बाद में जाना, यह देखो कि मेरा अपना बेटा जो दीन का नुक़सान कर रहा है उससे मेरे अन्दर क्या कैफ़ियत है, तब्लीग़ी होना कोई बात नहीं है कि तीन दिन लगाये तो तब्लीग़ी जमाअ़त के हो गये? चिल्ला लगाया कि हम दावत का काम करने वाले हो गये, किसी पर जमाअ़ती होने की मोहर लग जाना बहुत आसान है, जमाअ़त के काम से निस्बत हो जाना बहुत आसान है लेकिन अन्दर की कैफ़ियत का बदल जाना, यह असल हक़ीक़त है। कितने चार-चार माह देने वाले, हर साल चार माह देने वाले, सालाना चिल्ला देने वाले, मक़ामी काम करने वाले, माहाना तीन दिन देने वाले?

कितने ऐसे हैं जिन्होंने अल्लाह के अवामिर को अपना यक़ीनी सबब समझा हुआ है? बात यह है कि कलिमे की दावत काम करने वालों ही से निकली हुई, है इस दावत के छूटे रहने ही से न ख़ुद हमारा यक़ीन बदला और न माहौल बदला, हाँ दावत के दो ख़ास्से हैं एक यक़ीन बदलना एक माहौल बदलना यह कलिमे की दो ख़ूबियाँ हैं।

Maktabe Ashraf

यक़ीन भी बिगड़े हुए होते थे माहौल भी बिगड़ा हुआ होता था। साँप-बिच्छू खाने तक क़ौम पहुँच जाती थी। सहाबा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हमारा तो यही हाल था, जाहिलियत अलग और कुफ़्र की ज़ुल्मतें अलग, न दीन के न दुनिया के किसी, क़िस्म की कोई इस्तिदाद नहीं थी। नबी सल्ल० ने आकर कलिमे की दावत दी कि नबी की आमद से उनकी कलिमे की दावत से यक़ीन भी बदलता है और माहौल भी बदलता है और जब कलिमे की दावत निकल जायेगी उम्मत में से तो यक़ीन भी बिगड़ेंगे और माहौल भी बिगड़ेगा।

इसलिए हुज़ूर अक्रम सल्ल० ने अपने हर उम्मती को कलिमे की दावत देने वाला बनाया था। हर एक जानता था कि मैं उम्मत की हिदायत का ज़रीया हूँ।

देखो मेरे दोस्तो! बहुत ज़रूरी बात है यह कि हमें हर उम्मती के अन्दर इस बात का एहसास पैदा करना है कि मैं हुज़ूर सल्ल० का नायब होने की हैसियत से हर उम्मती की हिदायत का ज़रीया बना हुआ हूँ। इस बात को तो ख़ूब अच्छी तरह से याद कर लो कि मैं बहैसियत उम्मती होने के कलिमे की दावत का यानी उम्मत की हिदायत का ज़रीया हूँ कि "कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि तअ्मुरून बिल मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निलमुन्करि व तुअ्मिनून बिल्लाह"

तुम्हें इन्सानों की नफ़ा रसानी के लिए भेजा गया है

क्या है नफ़ा रसानी?

कि तुम तआ़रूफ़ कराते हो अल्लाह का यानी कलिमे की दावत देते हो और इन्सानों के अन्दर से

अस्बाब का यक़ीन निकालते हो और इसके साथ यह शर्त लगी हुई है कि ख़ुद अपने अन्दर अल्लाह की ज़ात और सिफ़ात और रबूबियत का यक़ीन रखते हो।

याद रखो मेरे दोस्तो! हर उम्मती सारी उम्मत की हिदायत का ज़रीया है लेकिन यह तिजारत करे और हिदायत का ज़रीया बने, यह ज़िराअत करे और हिदायत का ज़रिया बने, या सिर्फ़ घर में बैठा रहे और हिदायत की दुआ माँगता रहे।

"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम" ऐ अल्लाह सबको हिदायत देदे।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! हिदायत हिदायत की दुआओं से नहीं बल्कि हिदायत की दुआएं भी कलिमे की दावत से क़ुबूल होंगी। जब उम्मत में से दावत निकल जायेगी तो उम्मत से हिदायत की दुआ भी क़ुबूल होना बन्द हो जायेगी, क्योंकि कलिमे की दावत दुआ की क़ुबूलियत की शर्त है।

दावत क्या है?

दुआओं की क़ुबूलियत के लिए शर्त है।

जब दावत छोड़ देगी उम्मत तो दुआएं भी छोड़ देगी। बिल्कुल पक्की बात है क्योंकि कलिमे की दावत और दुआ दोनों एक दूसरे के लाज़िम मल्ज़ूम हैं। कलिमे की दावत छूटने से अस्बाब का यक़ीन आता है और अस्बाब का यक़ीन दुआओं से महरूम करता है, बहुत सीधी बात है। दावत के छूटने से क्या आयेगा? कलिमे की दावत छूटने से अस्बाब का यक़ीन आयेगा और अस्बाब का यक़ीन दुआ से महरूम करेगा, कि

Maktabe Ashraf

दुआ से क्या होगा दुकान से होगा, दुआ से क्या होगा हुकूमत से होगा। मैं सफ़र में गया अभी बड़ौत और बाग़पत के पास से गुज़र रहा था कि रास्ते में बहुत सारे मुसलमान और गैर मुस्लिम मर्द-औरत और बच्चे पूरी भीड़ बनाकर जा रहे थे सड़क पर। तो मैंने शीशा खोलकर अपनी गाड़ी का उनसे पूछा कि भाई क्या बात है यह काहे की रैली निकल रही है, यह क्या हो रहा है?

कहने लगे कि एक हफ़्ते से बिजली नहीं आ रही है तो रैली निकाल रहे हैं।

मैंने पूछा कहाँ जाओगे तुम लोग? कहने लगे कि यहां के थाने को घेरने जा रहे हैं।

मैंने कहा कि तुम थाने जाने के बजाय मस्जिद में चले जाओ अल्लाह से मनवालो, तो अल्लाह को अगर इस हुकूमत से काम लेना होगा तो लेंगे और बिजली पहुँचेगी अगर ये नहीं देंगे तो अल्लाह बिजली देंगे किसी और सबब से देंगे।

मेरे बुजुर्गो दोस्तो और अज़ीज़ो! बात यह है कि जब यक़ीन बिगड़ जाते हैं तो ईमान वाले बजाये मस्जिद का खूँटा बनने के वे धरने देते हैं, जब ईमान बिगड़ जाते हैं तो बजाय रोज़ा रखने के भूख हड़ताल करते हैं। कि भूख हड़ताल करो कि क्या बात है, जी हमारे ये मुतालबे हैं, मुतालबे अलग पूरे नहीं हो रहे और खाना भी नहीं मिल रहा। हाँ, एक अजाब दुनिया में और एक अज़ाब आख़िरत में होगा। सच्ची बात है, जब यक़ीन बिगड़ेंगे तो और क्या करेंगे कि 'धरना देंगे, भूख

हड़ताल करेंगे, रैली निकालेंगे।

अरे मस्जिद के खूँटे बन जाओ ना सहाबा किराम कहाँ जाते थे? आँधी आये तो, सूखा पड़े तो, मुक़दमा आ जाये तो क़र्ज़ा हो जाये तो मस्जिद में और यह कहाँ कि हुकूमत की स्कीमें क्या हैं इस साल की, तो हुकूमत की स्कीमों के यक़ीन की वजह से हुकूमत की तिजारत की स्कीमों का हराम इसके मुँह में जायेगा और फिर ये कहेंगे उलमा से कि इसको यूँ कर दो, देखो हराम वह था यह नहीं है, हालांकि वह हराम की बिगड़ी हुई शक्ल होगी।

हज़रत फ़रमाते थे कि तुम सुव्वर के कबाब खाओ चाहे सुव्वर का गोश्त मिले हुए बिस्कुट खाओ दोनों हराम हैं। तो बातिल हराम की शक्ल को बदल कर ईमान वालों को खिलायेगा ताकि इनके यक़ीन बिगड़ें ये दुआओं से महरूम हों तो हमारा काम चले। मेरे दोस्तो! इस वक़्त हलाल की इतनी तलाश नहीं है जितना हराम को हलाल करने की कोशिश है इस ज़माने में।

अगर उम्मत कमाने में हलाल पर आ जाये तो अल्लाह इस पर कमाइयों के रास्ते भी खोल देंगे, कि तू यह कर, तू वह कर। अल्लाह अस्बाब को आसान भी कर देंगे और इनके लिए कमाई के रास्ते भी खोल देंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो! इसकी निय्यत करो कि उम्मत को कलिमे की दावत पर लाना है ताकि ईमान की दावत से वह यक़ीन बने जो अल्लाह के वादों के यक़ीन पर खड़ा कर दे और अल्लाह के अवामिर

Maktabe Ashraf

हमारे यक़ीनी सबब बन जायें, इतना ईमान सीखना फ़र्ज़ है कि यह कलिमा हमें अस्बाब के यक़ीन से निकाल दे।

इसलिए यह ईमान की दावत, कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत का यह काम है, कि बग़ैर ईमान के कोई अमल अल्लाह के ख़ज़ाने से फ़ायदा नहीं दिला सकेगा। मेहनत तो हर एक कर रहा है, लेकिन ईमान ईमान के दावों से बन जाये या ईमान खुद ब ख़ुद बढ़ता रहे ऐसा नहीं होगा बल्कि ईमान ईमान की दावत से बनेगा और ईमान ईमान की दावत से तरक़्क़ी करेगा। फिर ईमान की दावत के साथ आमाल की दावत, आमाल की दावत के साथ आख़िरत की दावत, यही हर नबी का तरीक़ा रहा है कि अस्बाब से ईमान की तरफ़ चीज़ों से आमाल की तरफ़ दुनिया से आख़िरत की तरफ़ जिसकी पहली मंज़िल बर्ज़ख़, दूसरी मैदाने महशर, तीसरी जन्नत या दोज़ख़ ये तर्तीब है दावत की, हज़रत फ़रमाते थे कि क़ब्र में ज़बान यक़ीन पर चलेगी, इल्म पर नहीं चलेगी कि हमें ख़बर है मन रब्बु-क, मा दीनु-क, मा नबिय्यु-क

कि तुम्हारी ज़रूरतों को यहां बर्ज़ख़ में, महशर में और जन्नत या दोज़ख़ में कौन पूरा करेगा ज़रूरतों को पूरा करने के क्या अस्बाब हैं और क्या तरीक़े हैं? और इन दोनों को हासिल करने की मेहनत, तुम्हें किस नबी ने बतलायी थी इसके इल्म पर ज़बान नहीं चलेगी बल्कि इसके यक़ीन पर ज़बान चलेगी अगर दुनिया से, बर्ज़ख़ में ये बातें इल्म में लेकर गया है तो यह क़ब्र

में, बर्ज़ख़ में नाकाम हो जायेगा और जो यहाँ क़ब्र में नाकाम हो जायेगा तो आगे की सारी मंज़िलों में नाकाम हो जायेगा, क्योंकि वहां सवाल यक़ीन का है।

हज़रत उमर रज़ि० को ऐसा यक़ीन हासिल हो गया था कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने सारा क़ब्र का नक़्शा खींचा हज़रत उमर रज़ि० के सामने कि ऐ उमर देख तुझसे क़ब्र में सवालात किये जायेंगे, मुन्कर और नकीर ये सवाल आकर तुझसे करेंगे और उनकी आवाज़ें बिजली की कड़क की तरह होंगी, उनके बाल उनके पैरों में उलझे होंगे और वे अपने दाँतों से तेरी क़ब्र खोदेंगे और उनके हाथ में इतना ज़बर्दस्त हथौड़ा होगा कि जिसको सारे दुनिया वाले मिलकर हरकत न दे सकेंगे। ऐ उमर वे तुझसे तीन सवाल करेंगे।

कि तुम्हारी ज़रूरतों को यहां कौन पूरा करेगा।

वे क्या अस्बाब हैं जिनसे तेरी ज़रूरत पूरी हो।

और वे कौन हैं जिसने तुम्हें वह तरीक़ा बतलाया है।

अगर तू इन सवालों का जवाब देने में ज़रा भी हिचकिचा गया तो इस हथौड़े से इस तरह मारेंगे कि तू बिल्कुल ख़ाक हो जायेगा।

हज़रत उमर रज़ि० ने पूरी बात सुन कर यह अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मेरी उस वक़्त यही कैफ़ियत होगी जो यहां इस वक़्त है, तो आप सल्ल० ने फ़रमाया कि हाँ, इसी कैफ़ियत पर होगा तू।

तो हज़रत उमर रज़ि० कहने लगे कि अच्छा जी फ़िर तो मैं उनसे निपट लूंगा। ईमान क्या लायेगा?

Maktabe Ashraf

ईमान इत्मीनान लायेगा।

इत्मीनान भी लायेगा और ख़ौफ़ भी लायेगा यानी ख़ौफ़ और उम्मीद, हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि अगर यह ऐलान हो जाये कि तमाम लोग जन्नत में जायेंगे सिर्फ़ एक को छोड़ कर तो मुझे अपने बारे में ख़ौफ़ है कि शायद वह जहन्नम में जाने वाला मैं ही हूँ और अगर यह ऐलान हो जाये कि तमाम लोग दोज़ख़ में जायेंगे सिर्फ़ एक को छोड़कर तो मुझे उम्मीद है कि वह जन्नत में जाने वाला सिर्फ़ मैं ही हूँ। ऐसा ख़ौफ़ और ऐसी उम्मीद, इस ईमान पर ऐसा इत्मीनान तो आप सल्ल० से फ़रमा रहे हैं हज़रत उमर रज़ि० कि फ़िर तो मैं क़ब्र में मुन्कर नकीर से निपट लूंगा।

इस पर जिब्रील अ़लै० आये और आकर आप सल्ल० से अ़र्ज़ किया कि ये जो आप के साथी हैं ना उ़मर इनका ऐसा ईमान है कि जब क़ब्र में सवालात इनसे किये जायेंगे तो ये हर सवाल का जवाब देने के बाद ख़ुद फ़रिश्तों से सवाल करेंगे कि:

मन रब्बु-क, मा दीनु-क मा नबिय्यु क

तो दोनों फ़रिश्ते कहेंगे कि समझ में नहीं आता कि हमें उमर के पास भेजा गया है सवाल करने के लिए या आज उमर को हम लोगों के पास भेजा गया है हम लोगों से सवाल करने के लिए।

लेकिन आज तो कलिमे की दावत उम्मत में से निकल चुकी है, आज उम्मत ईमान पर न जुड़ के अस्बाब पर जुड़ रही है, सारा मुल्क जमा हो रहा है, तिजारत की बुनियाद पर हथियारों की बुनियाद पर

Maktabe Ashraf

ज़िराअत की बुनियाद पर ये सारे के सारे नाकामी देखने वाले हैं आगे और जो ईमान पर जमा होंगे, अहक़ामात पर जमा होंगे, "ईमान के हलक़ों में जमा होंगे"

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इनके लिए ज़ाहिर के ख़िलाफ़ कर के दिखलायेंगे, अल्लाह ने पहले भी ऐसा किया है आइन्दा भी ऐसा करेंगे और आज भी ऐसा कर रहे हैं।

भई बात यह है मेरे दोस्तो! जब बातिल नक़्शे टूटें और ईमान वालों को फिर भी न होश आये तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इनको भी मार कर क़ब्र का अज़ाब शुरू कर देते हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त तो बातिल नक़्शों को ईमान वालों के लिए तोड़ते हैं कि देख लो इससे इबरत हासिल कर लो, अगर तुम नहीं समझोगे इससे तो हम तुम्हारे भी नक़्शे तोड़ेंगे, ऐसे ही जैसे हम ग़ैरों के नक़्शे को तोड़ रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हालात लाते हैं उनसे ईमान वाले समझते हैं बेईमान नहीं समझते कि मेरी तिजारत नहीं चल रही मुझे तो कोई वज़ीफ़ा बता दो।

अरे अल्लाह ने सबसे बड़ा वज़ीफ़ा अपना फ़रीज़ा दिया हुआ था, तूने तो नमाज़ के ज़रीये लेना सीखा ही नहीं, तो तेरा कहाँ से मस्अला हल हो जाये, जब नमाज़ के बारे में पूछो तो कहते हैं कि जी दुआ करो अल्लाह नमाज़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, लेकिन अभी तो कोई तावीज़ दे दो जिससे मेरा क़र्ज़ा अदा हो जाये।

जिसका यक़ीन अल्लाह की ज़ात पर नहीं होता

Maktabe Ashraf

अस्बाब पर होता है तो यह अमल उसे कामयाबी नहीं दिलाता, वह अमल को छोड़कर यानी फ़राइज़ को छोड़ कर नवाफ़िल की तरफ़ जायेगा, और जो नमाज़ छोड़ दे उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं है। वह अल्लाह के वादों से कैसे फ़ायदा उठा सकेगा, क्योंकि अल्लाह के वादे तो इस्लाम के साथ हैं उसके वादे उसके हुक्मों के साथ हैं जब इस्लाम में इसका कोई हिस्सा ही नहीं जैसे दुनिया में मुख़तलिफ़ क़िस्मों के शियर होते हैं, मुख़तलिफ़ क़िस्मों के हिस्से होते हैं, लोग उसमें हिस्सा डालते हैं और घर बैठे पैसे मिलते हैं। तो इसका इस्लाम में कोई हिस्सा ही नहीं, फिर जिस के पास नमाज़ नहीं उस का इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं उसे हज और ज़कात पर क्या मिलेगा जब नमाज़ ही नहीं इस्लाम की जड़ बुनियाद ही नहीं इसलिए सोचो कि यक़ीनी अस्बाब क्या हैं और ग़ैर यक़ीनी अस्बाब क्या हैं, इनके दरमियान फ़र्क़ करो, इसमें यक़ीन वाला फ़र्क़ कर सकेगा लेकिन जिसे यक़ीन नहीं उसे तो यह भी ख़बर नहीं कि हालात क्यों आ रहे हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हालात लाते हैं समझाने के लिए मुतनब्बह करने के लिए अगर हालात से यह न फिरा, अल्लाह की तरफ़ रूजू न किया तो फिर मार कर क़ब्र का अज़ाब शुरू कर देते हैं।

मेरे दोस्तो! हालात तो तम्बीह के लिए लाये जाते हैं अगर इन हालात से भी यह सही रास्ते पर न आये तो मार कर क़ब्र का अज़ाब शुरू कर देते हैं। इसलिए हालात को अपने आमाल से जोड़ कर देखो तो यह

हालात तरबियत भी कर दें और तरक़्क़ी भी कर दें।

ईमान की अ़लामत है यह कि ईमान वाला अपने हालात को अस्बाब से नहीं जोड़ेगा, यह ईमान की अलामत है, यह अपने हालात को अपने आ़माल से जोड़ लेगा और बेईमान कि वह अपने हालात को अपने अस्बाब से जोड़ेगा तो इस बेईमान पर जितने हालात ख़राब आयेंगे उतने ही ज़्यादा अस्बाब बनायेगा कि ये हालात हैं तो ये हथियार लाओ यह हालात हैं तो यह माल लाओ यह बीमारी है तो यह दवा लाओ हाँ, बीमारियाँ कि लोग यूँ समझते हैं कि बीमारियों के लिए दवाएं, अभी हमने बीमारियों का इलाज आमाल से नहीं किया और अभी हमें यह भी ख़बर नहीं कि जिस्म के आजा से जब अल्लाह का हुक्म टूटता है तो उस हुक्म के टूटने पर उस उ़ज़्व पर कौन सी बीमारी आयी?

उ़ज़्व के हुक्म के टूटने से कौन सी बीमारी आती है इसकी हमने कभी जानने की ज़रूरत ही नहीं समझी? जैसे एड्स मशहूर बीमारी है, कहाँ से आयी यह एड्स की बीमारी शर्मगाह के हुक्म के टूटने की वजह से अल्लाह ने भेजी है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि जिस उ़ज़्व से अल्लाह का हुक्म टूटेगा उस उ़ज़्व की बीमारी का सबसे पहला सबब अल्लाह का हुक्म टूटना ही है। कि उस उ़ज़्व में जो बीमारी आयी है उस उ़ज़्व में बीमारी का आना उसका सबसे पहला सबब उस उ़ज़्व से अल्लाह का हुक्म टूटना ही है।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो! बहुत अक़्लमंदी की बात और बहुत कामयाबी का रास्ता वह यह है कि अपने हालात को बजाय अस्बाब से जोड़ने के, अपने हालात को अपने आमाल से जोड़ लो, तो हालात तरबिय्यत करदें, क्योंकि हालात तरबिय्यत और तरक़्क़ी के लिए हैं ये हालात यानी तक्लीफ़, बीमारियाँ, मुसीबतें, मुक़द्दमें, क़र्ज़े वग़ैरह ये तरबिय्यत के लिए हैं कि इन्सान सही रास्ते पर पड़ जाये मगर हालात तरबिय्यत और तरक़्क़ी ईमान वाले की करेंगे। यह ईमान की अलामत है कि ये अपने हालात को अपने आमाल से जोड़ते हैं और बेईमान अपने हालात को जोड़ेगा अस्बाब से।

क्योंकि अल्लाह तआला ने ईमान वाले को अहकामात दिये, और बेईमान को अस्बाब दिये।

हाँ बिल्कुल साफ़ बात है, न इसमें कोई शक है और इसके समझने में कोई दिक़्क़त भी नहीं है कि अल्लाह ने अस्बाब दिये बेईमानों को और अहकामात दिये ईमान वालों को।

तो बेइमान मुतमईन हैं अपने अस्बाबों से जिनके दिलों में अल्लाह की ज़ाते आली का कोई यक़ीन नहीं है तो वे दुनिया के अस्बाब से राज़ी भी हो गये और मुतमइन भी हो गये कि क़ुरआन कहता है यह बात कि हमारी निशानियों से हमारे अहकामात से वे ग़ाफ़िल हैं, और ईमान वाले कि हमने ईमान वालों को अस्बाब के दर्जे में अपने अहकामात दिये हैं पक्की बात है।

तो क्या ईमान वाले अस्बाब नहीं इख़्तियार करेंगे? नहीं ईमान वाले तो हुक्म की बुनियाद पर अस्बाब

इस्तिमाल करेंगे, तो ये अस्बाब में अहकामात तलाश करेंगे।

ग़ैरों के पास कामयाबी का सबब तिजारत है और ईमान वाले के पास कामयाबी का सबब ख़ुदा के अहकामात हैं।

जब ईमान नहीं रहेगा मेरे दोस्तो! तो हम भी ग़ैरों के रास्ते पर तिजारत करेंगे, कि सूदी कारोबार करेंगे और ये कहेंगे कि दुनिया दारूल अस्बाब है सबब तो बनाना है कोई न कोई, तो अस्बाब बनाने में हराम अस्बाब इनकी ज़िन्दगियों में अस्बाब के यक़ीन की वजह से आयेंगे।

यक़ीन तो एक ख़ास शक्ल से ज़िन्दगियों में आयेगा, तक़रीरों से नहीं यक़ीन बना करते मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब यक़ीन की बात हो, तो यक़ीन की बात में ऐसे खो जाओ कि तुम्हें अपने अन्दर का शिर्क दिखायी देने लगे ऐसा नहीं कि यक़ीन की बात में किसी और बात को सोचें।

सुनो मेरे बुज़ुर्गो अपने आप को यक़ीनी अस्बाब पर लाओ, यक़ीनी अस्बाब पर वे आयेंगे जो ईमान के हलक़े क़ायम करेंगे, सहाबा किराम ईमान के हलक़ों से अपना ईमान बनाते थे, वे ईमान के हलक़े ख़त्म हो गये कि "आओ बैठो थोड़ी देर ईमान ले आयें" अव्वल तो यह ग़लत फ़हमी कि कलिमे की दावत ग़ैरों के लिए है इस उम्मत के साथ जो सबसे बड़ा हादसा हुआ वह यही कि कलिमे की दावत तो ग़ैरों के लिए है, हम तो हैं ईमान वाले।

Maktaba Ashraf

हमें ईमान से ग़ाफ़िल किया ईमान के दावे ने. अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को ईमान की दावत पसन्द है ईमान का दावा नहीं। जो ईमान का दावा करे उस पर अल्लाह इम्तिहान डाल दें कि कैसे कहा तुमने कि ईमान ले आये, हालांकि ईमान तुम्हारे दिलों में अभी दाख़िल नहीं हुआ कि नबी जी कह दीजिए इनसेः

"लम तुअ्मिनू वला किन कूलू अस्लम्ना"

कि कह दीजिये इनसे कि ये ईमान नहीं लाये इस्लाम लाये हैं।

हाँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ख़ुद कह रहे हैं कि ये ईमान नहीं इस्लाम लाये हैं।

यह ईमान, इमान जब आयेगा मेरे दोस्तो! जब आ़माल अन्दर का तक़ाज़ा बन जायेंगे और ऐसा तक़ाज़ा बन जायेंगे कि दुनिया की कोई ताक़त किसी अदना अ़मल का मुक़ाबला नहीं कर सकेगी, दुनिया की कोई ताक़त ईमान वालों को अदना अ़मल से भी न रोक सकेगी और जब ईमान नहीं होता तो दीन अपनी सतह से गिरते गिरते फ़राइज़ पर आ जाता है क्योंकि फ़राइज़ कुफ़्र और इस्लाम की बाड़ हैं, ये फ़राइज़ कुफ़्र और इस्लाम की आड़ और दीवार हैं सिर्फ़, अगर यह दीवार भी बीच से हट जाये तो बन्दा कुफ़्र तक पहुँच गया।

ये फ़राइज़ ही तो कुफ़्र और इस्लाम में फ़र्क़ हैं, इससे मुतमइन न हो जायें कि नमाज़ तो हम पढ़ते ही हैं, सिर्फ़ नमाज़ ही दीन नहीं है, या और सारे फ़राइज़ ही सिर्फ़ दीन नहीं हैं। फ़राइज़ तो कुफ़्र और इस्लाम

Maktabe Ashraf

की आड़ है सिर्फ़।

तो जब ईमान नहीं होगा तो फिर दीन में इतना इन्हितात आयेगा यानी दीन के अन्दर इतनी कमी आयेगी कि गिरते गिरते यहाँ पर पहुँचेगा कि नमाज़ ही सिर्फ़ दीन है इस्लामी मुआशरा इससे दूर चला जायेगा, ग़ैरों के तरीक़े महबूब होंगे।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब उम्मत में से ईमान की दावत ख़त्म होगी तो सबसे पहले इसका मुआशरा मुर्तद होगा, कि नमाज़ पढ़ेंगे, शक्लें ग़ैरों की, लिबास ग़ैरों के, नमाज़ पढ़ेंगे तिजारत ग़ैरों की, नमाज़ पढ़ेंगे मकान ग़ैरों जैसे, नमाज़ पढ़ेंगे शादियां ग़ैरों की और यह कहेंगे कि हम तो नमाज़ पढ़ते हीं हैं। जब इनको किसी मुन्कर से रोका जायेगा और कोई भला काम इनके सामने आयेगा तो सबसे पहले इन्हें जो मुतमइन करने वाली चीज़ होगी वह नमाज़ होगी, हालांकि मुआशरा मुर्तद हो चुका, और जब मेरे दोस्तो! मुआशरा मुर्तद हो जाता है तो फिर उसके बाद ज़हनी इर्तिदाद आता है, कि आदमी का ज़हन मुर्तद हो जाता है।

किसे कहते हैं ज़हनी इर्तिदाद?

ज़हनी इर्तिदाद कहते हैं अल्लाह तआला के अहकामात को अस्बाब के मुक़ाबले में हलका समझना, कि अल्लाह के अहकामात का इस्तिख़फ़ाफ़ यानी अहकामात को हल्का समझेगा, बिल्कुल पक्की बात अर्ज़ कर रहा हूँ, यह बात बिल्कुल मुशाहदे में है कि जब यक़ीन कमज़ोर होंगे तो मुआशरे का इर्तिदाद आयेगा

जब मुआशरा मुर्तद हो जायेगा तो जहनी इर्तिदाद आयेगा कि अल्लाह के अहकामात से शर्माएगा।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो-अज़ीज़ो! याद रखना कि सिर्फ़ नमाज़ से मुसलमान ज़िन्दा नहीं रहेगा मुसलमान इस्लाम से यानी हुज़ूर सल्ल० के मुआशरे से ज़िन्दा रहेगा वरना पिछली क़ौमें जब उनके नबी चले जाते थे तो उनमें नमाज़, हज, तवाफ़ वग़ैरह तक बाक़ी रहता लेकिन शैतान उनके आमाल की शक्ल इतनी बदल देता था कि उनके आमाल, उनके मुआशरे के मुताबिक़ हो जाते यहां तक कि हज एक रस्म बन जाता था नंगे-नंगे हज करते थे। हज जो सबसे बड़ी इबादत, जो कपड़े पहन कर हज कर रहा है वह छोटी इबादत कर रहा है और जो नंगे नंगे हज करे वह बड़ी इबादत कर रहा है, क्योंकि जहालत से अमल तो बाक़ी रहे लेकिन जहालत से वह अमल बदल जायेगा और यही आज हो रहा है कि हम दीन पर चलेंगे लेकिन मुआशरे और माहौल की रिआयत से दीन पर चलेंगे शौहर बीवी की रिआयत से, बेटा दीन पर चले बाप की रिआयत से, दीन पर चलने में बाप की रिआयत हराम है, दीन पर चलने में शौहर पर बीवी की रिआयत हराम।

तो इसने पूरा दीन नाम रखा है नमाज़ का, हालांकि यह आख़िरी चीज़ रह गयी है इसके पास इसके बाद कुछ नहीं कि जिसने नमाज़ को हल्का समझा और नमाज़ से इन्कार किया उसने कुफ़्र किया, हाँ दुकान के मुक़ाबले में नमाज़ को हल्का समझना कि नमाज़ यक़ीनी सबब है और दुकान ग़ैर यक़ीनी सबब।

Maktabe Ashraf

फिर नमाज़ के वादों का इन्कार कि, नमाज़ का इन्कार ग़ैर ईमान वाला थोड़े ही करेगा ईमान वाले पर नमाज़ फ़र्ज़ है फिर नमाज़ का इन्कार कौन करे? कि नमाज़ के इन्कार से मुराद नमाज़ के फ़ज़ाइल से इन्कार कि नमाज़ रोज़ी कैसे खींच लायेगी? नमाज़ से बीमारी कैसे दूर होगी? नमाज़ से सेहत की हिफ़ाज़त कैसे होगी? अल्लाह के वादों का इन्कार ही कुफ़्र है वरना नमाज़ का इन्कार तो ग़ैर ईमान वाला भी नहीं करेगा वह भी तो कहता है कि नमाज़ अच्छी चीज़ है पर हमारे यक़ीन के बिगड़ जाने की वजह से आज हम अल्लाह के वादों का भी इन्कार कर रहें हैं यह इन्कार ही कुफ़्र है कि ऐसे रास्ते पर पड़ा है यह कि इसका कुफ़्र पर पहुँचना यक़ीनी है कि नमाज़ का इन्कार और इसको हल्का समझना इसे कुफ़्र पर पहुँचा देगा। अब कोई आड़ नहीं रही जो इसे कुफ़्र से बचाये।

इसलिये मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! जब कलिमे की दावत उम्मत में से निकल जायेगी तो सबसे पहले मुआशरा मुर्तद होगा फिर ज़हन मुर्तद होगा, फिर क़ल्ब मुर्तद होगा, क्योंकि जब यक़ीन न होगा तो फिर यह माहौल के एतिबार से चलेगा और फिर दीन उस ज़माने के एतिबार से हो जायेगा कि इसके जैसे हालात हैं उसी के बक़द्र दीन पर चलो तो इस नाक़िस दीन पर चलने की वजह से इस पर हालात आयेंगे, परेशानियां आयेंगी, नाकामी आयेगी।

मेरे दोस्तों-बुज़ुर्गो! एक तो परेशानी आती है बेदीनी की वजह से और एक परेशानी आती है नाक़िस दीन

की वजह से, हमारा दीन नाक़िस है, इससे परेशानी आयेगी, बावुजूद नमाज़ पढ़ने के उनके ऊपर हालात आयेंगे कि नमाज़ पढ़ते हैं पर हालात आ रहे हैं।

क्योंकि यह चाहेगा कि मैं अपने ऐतिबार से दीन पर चलूं और कामयाबी मुझे पूरी मिले, तो फिर यह शिकायत करेगा कि मैं नमाज़ पढ़ता हूँ और फिर भी यह हालात हम पर आ गये।

मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! अपने हालात को हर वक़्त अपने आमाल से जोड़ते रहो, तो फिर ये हालात हमारे अन्दर से चुन-चुन कर उन आमाल को हमारे अन्दर से निकालेंगे जिनकी वजह से ये हालात आ रहे थे, और अगर हालात को अस्बाब से जोड़ा तो फिर दीन से और दूरी हो जायेगी, फिर यह कहेगा कि मेरे हालात ऐसे नहीं हैं कि मैं सूदी कारोबार न करूं, मेरे हालात ऐसे नहीं हैं कि मैं लोन पर पैसे न लूं, फिर अस्बाब इसको सब्ज़ बाग़ दिखायेंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो बुजुर्गो! अपने हालात को अपने आप से जोड़ो, यह हर आदमी के अपने सोचने की बात है, तो जब हालात को आमाल से जोड़ोगे तो ये हालात इसकी तरबियत कर देंगे और जब ये हालात को अस्बाब से जोड़ेगा तो फिर ये अस्बाब इसको दीन से दूर ले जायेंगे कि अभी हमारे हालात दावत की मेहनत को सीखने के नहीं हैं, कुछ अस्बाब बना लें फिर दीन को सीखेंगे।

मेरे दोस्तो! अस्बाब के मिलने पर दीन नहीं है, दीन से अस्बाब आते हैं, अस्बाब से दीन नहीं आता कि

Maktabe Ashraf

पहले अस्बाब बना लें फिर दीन सीखेंगे, सहाबा किराम इस पर नहीं थे कि पहले अस्बाब बना लें फिर दीन सीखेंगे बल्कि सहाबा बग़ैर अस्बाब के फ़ाक़े में दीन सीखते थे, तो अल्लाह ने उनको अस्बाब दिये थे। वे सहाबी जो दो-दो वक़्त फ़ाक़े पर गुज़र करते थे, वे सहाबी अपने माल की 40-40 हज़ार दिरहम की ज़कात देने वाले बने कि अल्लाह ने अब उन्हें अस्बाब दिये कि मिट्टी को भी हाथ लगा दें तो सोना बन जाये, इनकी तिजारत भी मुल्कों में फैल गयी। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० जैसे, और वे क़ौमें जिन्होंने नबी से यूँ कहा कि पहले अस्बाब बनाओ फिर हम दीन सीखेंगे तो अल्लाह तआला ने उनसे यूँ फ़रमाया कि अगर अस्बाब मिलने पर भी तुम लोग पूरे के पूरे दीन पर न चले तो ऐसा अज़ाब लायेंगे कि वह अज़ाब बहुत दर्दनाक होगा।

मेरे दोस्तो! जो दीन पर चलने के लिए अस्बाब मांगेंगे और दीन पर न चलेंगे, क्योंकि जितने दीन पर बग़ैर अस्बाब के चला जा सकता था उतने पर भी ये नहीं चलेंगे और इन्होंने सारे के सारे दीन को अस्बाब पर मौक़ूफ़ किया, याद रखना कि दुकान का नमाज़ से कोई ताल्लुक़ नहीं, माल से नमाज़ को कोई ताल्लुक़ नहीं, नमाज़ के लिए किसी अस्बाब की ज़रूरत नहीं।

क्यों भई कोई सबब चाहिए नमाज़ के लिए? कि ये अस्बाब हों तो नमाज़ पढ़ूँ, दुनिया का कोई सबब ऐसा नहीं है जिस पर नमाज़ मौक़ूफ़ हो और नमाज़ के अन्दर का कोई अमल ऐसा नहीं कि किसी सबब पर

Maktabe Ashraf

मौकूफ़ हो, अगर एक आदमी सर से पाँव तक बिल्कुल नंगा हो, उसके बदन पर कोई कपड़ा नहीं है तो बताओ उस पर नमाज़ फ़र्ज़ है या नहीं? इसके पास बदन छुपाने के लिए एक धागा भी न हो लेकिन इस पर नमाज़ फ़र्ज़ है जिस तरह सर से पैर तक कपड़े पहने हुए पर नमाज़ फ़र्ज़ है यूं कहें कि इस नंगे आदमी पर भी उसी तरह यह नमाज़ फ़र्ज़ है कि शरीअत ने इसको नमाज़ अदा करने का तरीक़ा बतलाया हुआ है।

यह नहीं कि तुम पर नमाज़ माफ़ है क्योंकि तुम्हारे पास अस्बाब नहीं बदन का ढांकना उसके लिए फ़र्ज़ है जिसके पास कपड़ा हो, हज करना फ़र्ज़ है उस पर जिसके पास माल हो सफ़र में ख़र्च का, जिसके पास सफ़र के ख़र्च का माल न हो उस पर हज फ़र्ज़ नहीं, ज़कात फ़र्ज़ है उस पर जिसके पास माल हो लेकिन इसके पास कपड़े नहीं पर नमाज़ फ़र्ज़ है। तो यह नहीं मेरे दोस्तो! कि पहले अस्बाब होंगे फिर दीन होगा, जो यूँ कहेंगे नबी से कि पहले अस्बाब लाओ तो यह वे लोग होंगे जिन्हें दीन पर चलना ही नहीं है। जिनको ईमान लाना ही नहीं था, तो अल्लाह ने उन्हें अस्बाब दिये इत्मामे-हुज्जत के लिए और अपना अज़ाब लाने के लिए, जो लोग दीन पर चलने के लिए अस्बाब माँगते हैं अल्लाह तआला फिर उन पर सख़्त पकड़ लाते हैं अगर अस्बाब मिलने पर भी दीन पर न चलें तो सख़्त अज़ाब लायेंगे। इसलिए मेरे दोस्तो! याद रखना कि अस्बाब से दीन नहीं आता दीन से अस्बाब आते

Maktabe Ashraf

हैं, जो लोग हुक्म पूरा करेंगे बग़ैर अस्बाब के तो अल्लाह तआला अस्बाब को उनके मुवाफ़िक़ कर देंगे।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें दावत से ईमान सीखना है क्योंकि ईमान वाले की यही अलामत है कि ईमान वाला अपने हालात में चौकन्ना हो जायेगा कि इन हालात का तअल्लुक़ मेरी बदआमालियों से है। बाज़ मर्तबा अल्लाह तआला हालात लाते हैं बावुजूद नमाज़ी होने के क्योंकि इसने उतने दीन को दीन समझा है जितने पर यह चल रहा है हालांकि दीन तो पूरा दीन है। यह यूँ समझ रहा है कि जितने दीन पर मैं चल सकता हूँ उनता ही दीन है।

लोग आते हैं आकर शिकायत करते हैं कि देखो जी मैं भी नमाज़ी हूँ और मेरे घर वाले भी नमाज़ी हैं लेकिन हमारे ऊपर ऐसे ऐसे हालात आते हैं, अल्लाह ने नमाज़ी होने के बाद भी कामयाब नहीं किया, कोई आकर कहता है शिकायत करता है कि मैं तो मस्जिद से नमाज़ पढ़ कर निकल रहा था तो पुलिस वाले मुझे पकड़ कर ले गये मैं बिल्कुल बेगुनाह हूँ।

मेरे दोस्तो! जिस तरह बेदीनी की वजह से नाकामी आती है, हालात आते हैं ठीक उसी तरह की नाकामी और हालात नाक़िस दीन की वजह से भी आते हैं और हम नाक़िस दीन पर चल रहे हैं क्योंकि हमारा दीन नाक़िस है? इसलिए कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं है।

इसलिए यह कि मेरे दोस्तो! हम ईमान की यक़ीन की बातें तो ख़ूब सुनते हैं पर आज तक हमें यह याद

Maktabe Ashraf

न हो सका कि ईमान कैसे बनेगा?

ईमान-ईमान की दावत से बनेगा

यह ईमान-ईमान की मेहनत से बनेगा।

हुज़ूर सल्ल० ने अपने सहाबा को कलिमे की दावत पर उठाया कि हर एक कलिमे का दाई था रोज़ाना का यह काम था। सहाबा का कि आओ बैठो ईमान ले आवें, अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० की रोज़ाना की मजलिसें कि "आओ बैठो ईमान ले आवें।

यह ईमान की दावत और ईमान के हल्क़े, ग़ैब के तज़्किरे ये बिल्कुल ख़त्म हो गये और मैं तो अर्ज़ किया करता हूँ कि अवामुन्नास में से तो ख़त्म हो ही गये थे ख़ुद दावत की मेहनत करने वालों के दरमियान से भी ख़त्म हो गये, सच्ची अर्ज़ करता हूँ।

हर साल के 4 महीने लगवालो, साल के चिल्ले लगवालो, महीने के तीन दिन लगवालो, रोज़ाना के ढाई घन्टे से लेकर 8 घन्टे लगाने वाले इनसे पूछो कि भई तुम्हारा ईमान का हल्क़ा कब होता है। 6 नम्बर गिनवाने को रह गये, हालांकि हर नम्बर की मेहनत में जो पहली मेहनत हर नम्बर के साथ जुड़ी हुई है कि दावत, वह दावत उस नम्बर की हक़ीक़त अपने अन्दर उतारने के लिए थी, मैं तो यहां तक अर्ज़ करता हूँ कि यह रोज़ाना अपने घर में अपनी बीवी और बच्चों के साथ ईमान का हलक़ा किस वक़्त लगाता है? कौन सा वक़्त है घर में ईमान का हल्क़ा लगाने का यह बताओ।

मैं मस्जिदवार जमाअत का साथी, मैं चार महीने

Maktabe Ashraf

लगाने वाला, मेरा 24 घन्टे में वह कौन सा घन्टा है जिसमें मैं अपनी बीवी बच्चों के साथ बैठ कर अल्लाह के ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे करता हूँ।

मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! हक़ीक़त यह है कि अभी तक हमने ईमान के बनाने का इरादा ही नहीं किया, हम तो यह समझ रहे हैं कि दावत का मतलब यह है कि एक आदमी तक़रीर करे और सब सुनें।

नहीं मेरे दोस्तो! ईमान की दावत का मक़सद यह है कि हर फ़र्द अपने घर से लेकर आलमी सतह पर हर फ़र्द-ए-उम्मत को अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए ईमान की दावत दे। हर फ़र्द अपने ईमान की तरक़्क़ी के लिए दूसरों को ईमान की दावत दे। यह था मक़सद इस काम का।

ज़नाबे रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में आम फ़िज़ा थी। ईमान के बनाने की और ईमान की दावत की, इस्लाम से कोई भागना चाहे तो दावत देने वालों से छूट कर कहां जायेगा, इस्लाम में कोई आना चाहे तो ईमान की दावत सिखलाने वाले, हर वक़्त मस्जिद में मुन्तज़िर तैयार बैठे हुए हैं, कितनी अजीब बात थी।

पूरे इस्लाम में से अगर एक आदमी भी भागना चाहता है तो दावत ने ऐसा हलक़ा बनाया हुआ था, दावत ने ऐसा बन्धन बनाया हुआ था, दावत ने ऐसा क़िला बनाया हुआ था कि इस्लाम से निकलना बहुत मुश्किल था, लेकिन दावत उम्मत में से निक़ली तो उम्मत का इस्लाम से निकलना आसान हो गया।

हज़रत फ़रमाते थे, कि जब उम्मत कलिमे की

Maktabe Ashraf

दावत को छोड़ देगी तो ग़ैरों का दीन इसे भला लगने लगेगा और अपना दीन हलका लगेगा। अगर कोई इस्लाम से भागना चाहे तो एक मस्जिदवार जमाअ़त का साथी वह चाहे किश्ती (नांव) चलाने वाला बादबान हो या दुकानदार हो या तिजारत करने वाला हो या काश्तकारी करने वाला ज़मीनदार हो ये सारे मस्जिद वार जमाअ़त के साथी हर एक ख़बर रखते थे, इन्सान की इतनी क़ीमत कलिमे की दावत की वजह से थी।

लेकिन आज इलाक़े के इलाक़े, मुल्क के मुल्क, सूबे के सूबे, गाँव के गाँव इस्लाम में से निकल जायें तो हमारे कानों में जूँ न रेंगेगी, क्योंकि हम बन बैठे ताजिर, हम बन बैठे दुकानदार, हम बन बैठे ज़मींदार, हमें क्या करना जबकि हम ताजिर बाद में हैं हुज़ूर सल्ल० के उम्मती पहले हैं। हम दुकानदार या ज़मींदार बाद में हैं, अपने नबी के नायब पहले हैं कि अल्लाह ने हमें इन्सानों की हिदायत का जरीया बनाकर ज़मीन पर भेजा है।

कलिमे की दावत और कलिमे की मेहनत का मुकल्लफ़ बनाकर भेजा है, लेकिन हम यह कहते हैं कि मियाँ, अल्लाह ही के हाथ में हिदायत है चाहे किसी को दे या न दे, अल्लाह ही के हाथ में गुमराही है जिसे चाहे गुमराह करे, नहीं ऐसा नहीं है बल्कि याद रखना मेरे दोस्तो, कि इन्सान ही इन्सान की हिदायत का ज़रीया है और इन्सान ही इन्सान की गुमराही का ज़रीया है। जब कलिमे की दावत को और कलिमे की मेहनत को किया जायेगा तो इन्सान की क़ीमत क़ायम होगी कि

Maktabe Ashraf

एक मुसलमान की क्या क़ीमत है।

"कलिमे की दावत" उम्मत की शफ़क़त दिलों में पैदा करेगी और कलिमे की दावत, उम्मत में इन्सान की अहमियत पैदा करेगी और जब कलिमे की दावत उम्मत में से निकल जाये तो फिर उम्मत का इस्लाम में से निकलना ऐसा आसान हो जायेगा, अव्वल तो पता ही नहीं चलेगा कि कहाँ के लोगों में कितना इस्लाम है और कहाँ के ईमान वाले पर कैसे हालात हैं।

क्योंकि मैं तो ताजिर हूँ और मैं तो कारोबारी हूँ, मेरे पास कहाँ मौक़ा है कि मैं कहीं जा सकूँ और फिर हिदायत तो अल्लाह के हाथ में है, अरे ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह ने तुझे ज़रीया बनाया है हिदायत का। हर मुसलमान को इन्सानों की हिदायत का ज़रीया बनाया है।

जब मुसलमान कलिमे की दावत को लेकर कलिमे की मेहनत को शुरू करेगा तो अल्लाह की तरफ़ से हिदायत का नुज़ूल शुरू हो जायेगा, इन्सानों का अल्लाह की तरफ़ आना शुरू हो जायेगा, लेकिन अगर हम अपने ईमान और इस्लाम को लिए हुए इसी तरह बैठे रहें, अपनी दुकानों और कारोबारों और ज़मीनदारी में और अपने अमल पर मुतमइन रहें कि मिया हम तो अमल करते ही हैं, हम तो नमाज़ पढ़ते ही हैं, हम तो तस्बीह और तिलावत करते ही हैं।

तो याद रखना ख़ुदा की क़सम तू उम्मत को दावत दिये बग़ैर सिर्फ़ अपने अमल से निजात नहीं पा सकेगा, बड़ी सख़्त बात है यह, लोग समझते नहीं हैं बस

Maktabe Ashraf

इश्काल पैदा करेंगे, पर क़सम खा कर अर्ज़ करता हूँ, उलमा ने साफ़ तौर से लिखा है कि "इस उम्मत की ज़िम्मेदारी यह है कि अगर इस उम्मत ने सिर्फ़ अपने अमल की फ़िक्र की और दूसरे के ईमान-अमल की फ़िक्र न की तो इस उम्मत का फ़र्द अपने अमल से निजात नहीं पायेगा"। मारिफ़ुल कुरआन तफ़सीर मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहब रह० में साफ़ साफ़ लिखा हुआ है। पर आज मुसलमान सवाल करेगा कि क्या सबको इस काम के करने का हुक्म है? क्या दावत फ़र्ज़-ए-ऐन है? या फ़र्ज़-ए-किफ़ाया है?

फ़तह मक्का के मौक़े पर हज़रत इक्रिमा ने भागना चाहा इस्लाम से, इस्लाम नहीं लाये थे ये अबूजहल के बेटे, अल्लाह ने एक किश्ती (नाव) चलाने वाले को इनकी हिदायत का ज़रीया बना दिया। किस को? एक किश्ती चलाने वाले बादाबान को, कोई बड़ा आदमी नहीं, कोई आलिम नहीं, बल्कि एक मामूली किश्ती चलाने वाले की दावत को हज़रत इक्रिमा रज़ि० की हिदायत का ज़रीया बनाया यानी दुश्मने-इस्लाम अबू जहल का बेटा फ़तह मक्का के मौक़े पर भागा इस्लाम से कि या तो क़त्ल होउंगा या मुझे मग़लूब होकर इस्लाम क़बूल करना पड़ेगा। लिहाज़ा यमन भाग लो, तो यह यमन की तरफ़ भागे और किश्ती में सवार होकर समन्दर के रास्ते से यमन की तरफ़ चले, तो किश्ती पलटने लगी समन्दर में। अब किश्ती पर सवार लोग हालात में आये तो वहां यह नहीं था कि यह आने वाला हाल समन्दर या हवा की मख़्लूक़ हो बल्कि यह

Maktabe Ashraf

हाल अल्लाह ही की मख़्लूक़ थी तो यें हालात क्यों आये। किश्ती पलटने लगी तो फ़ौरन इस हाल को आमाल से जोड़ा। वहां सिर्फ़ इतनी बात नहीं थी। हमने तो कलिमा पढ़ ही लिया है। बल्कि वहाँ बच्चे-बच्चे का, मर्द का, औरत का यह यक़ीन बनाया और सिखाया गया था कि हर मुसीबत से कलिमा बचायेगा यानी अल्लाह बचायेंगे, वहां तो यह यक़ीन बना हुआ था, पुराने नये का, औरत मर्द का, अब किश्ती में आया तूफ़ान।

इक्रिमा को बज़ाहिर तैरना भी नहीं आता था, तो किश्ती वाले से कहने लगे कि मेरे बचाव का कोई तरीक़ा, मेरे बचाव का कोई रास्ता है।

किश्ती वाला कहने लगा कि पानी तुम्हें न डुबोये तुम पानी में गर्क़ होने से बच जाओ तो इससे बचने का भला रास्ता यह है कि तुम कलिमा-ए-इख़्लास कह लो, बच जाओगे।

इक्रिमा कहने लगे कि भई मुझे तैरना नहीं आता किश्ती पलटने वाली है मैं डूब जाउंगा किश्ती वाला कहने लगा कि यह पानी तुम्हें कैसे डुबोयेगा जब तुम कलिमा-ए-इख़्लास कह लोगे, तो हज़रत इक्रिमा इस्लाम तो लाये नहीं थे जो उन्हें पता होता कि कलिमा-ए-इख़्लास किस को कहते हैं तो पूछा कि भई यह कलिमा-ए-इख़्लास क्या होता है कि तुम कह रहे हो कि कलिमा-ए-इख़्लास कह लो बच जाओगे तो हमें बताओ कि कलिमा-ए-इख़्लास क्या होता है?

तो वे किश्ती वाला कहने लगा कि तुम्हें नहीं

मालूम कि यह क्या होता है? तो इक्रिमा ने कहा कि नहीं, हमें नहीं मालूम, किश्ती वाले ने कहा कि कहो, "लाइलाह इल्लल्लाह" इक्रिमा कहने लगे कि इसी वजह से भाग कर आया हूँ मैं, तेरी किश्ती में इसी वजह से सवार होकर यमन जा रहा हूँ, किश्ती वाले ने कहा अच्छा तुम इसी वजह से भाग रहे हो, तो चलो वापस चलो, किश्ती वाले ने कलिमा-ए-इख़्लास की दावत दी और इन्हें वापस लाकर इनकी बीवी हज़रत उम्मे हकीम रज़ि० के हवाले किया वह इन्हें लेकर हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई। वहाँ पर उन्होंने जाकर कलिमा का इक़रार किया, जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० के यहां इस किश्ती वाले की दावत पर इस्लाम लाने वाले हज़रत इक्रिमा रज़ि० से बेहतर अल्फ़ाज़ में जो उन्होंने उस मौक़े पर कहे, किसी ने नहीं कहे। इस नाव चलाने वाले की कलिमे की दावत पर जो इस्लाम इक्रिमा लेकर आये हैं, जो अल्फ़ाज़ इक्रिमा ने कहे इस्लाम की क़बूलियत पर, वे अल्फ़ाज़ किसी सहाबी ने इस्लाम के क़ुबूल करते वक़्त नहीं कहे।

मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत से उम्मत में 3 चीज़ें पैदा होंगी।

(1) इताअ़त, (2) कलिमे की मेहनत, (3) हिजरत, उम्मत के अन्दर जिहाद की भी इस्तिदाद कलिमे की दावत से पैदा होगी तो क्या कहा इक्रिमा ने इस्लाम क़ुबूल करते वक़्त? "इन्नी मुस्लिमुन, मुजाहिदुन, मुहाजिरून"

ये अल्फ़ाज़ किसी सहाबी से साबित नहीं हैं, इसमें

कोई शक नहीं कि सारे सहाबी मुजाहिद भी थे, मुहाजिर भी थे, मुसलमान भी थे। लेकिन ये अल्फ़ाज़ इस्लाम के कुबूल करने पर सिर्फ़ हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहे हैं, "इन्नी मुस्लिमुन, मुजाहिदुन, मुहाजिरून"

मुस्लिम कहते हैं, अपने आप को अल्लाह के हुक्मों पर सौंप देने वाले को। मुजाहिद कहते हैं दावत के तक़ाज़ों पर हर चीज़ को कुर्बान कर देने वाले को। यहां तक कि अपनी जान तक कुर्बान कर देने वाला।

मुहाजिर कहते हैं, हर उस चीज़ से जिससे अल्लाह ने रोका है, उससे रूक जाने वाला, अगर दावत के तक़ाज़े पर अपना घर छोड़ना पड़े तो अपना घर छोड़ देने वाला तो आकर हज़रत इक्रिमा ने यही अर्ज़ किया कि मैं इस्लाम लाने वाला अल्लाह की इताअत करने वाला, अल्लाह के दीन की मेहनत करने वाला अल्लाह के लिए वतन छोड़ने वाला, यह इस्तिदाद कलिमा-ए-इख़्लास की दावत जो नांव चलाने वाले ने इन्हें दी, उससे पैदा हुई।

मेरे दोस्तो, बुजुर्गो, अज़ीज़ो! यह मेहनत हो रही है कलिमे की दावत को मुसलमानों में ज़िन्दा करने की, कि इसकी दावत से पूरा दीन, हक़ीक़त के साथ इसकी ज़िन्दगी में आना है, अन्दर के तक़ाज़े पर, अभी हमारा दीन वक़्ती है, इसलिए कि हमें अपने दीन से कामयाबी का यक़ीन नहीं है। इस यक़ीन का ताल्लुक़ कलिमे की दावत से है। कलिमे की दावत के साथ कलिमे की मेहनत है। यही दावत हर नबी की बेअ्सत का मक़सद है। कलिमे की दावत से यक़ीन, यक़ीन से आमाल,

Maktabe Ashraf

आमाल से अल्लाह की रज़ा अल्लाह की रज़ा से कामयाबियाँ और हम मेहनत कर रहे हैं अस्बाब पर, तो अस्बाब की मेहनत से यक़ीन की ख़राबी यक़ीन की ख़राबी से आमाल की ख़राबी, आमाल की ख़राबी से अल्लाह की नाराज़गी अल्लाह की नाराज़गी से हालात का बिगड़ना हमारी इस मेहनत का तो यह मुख़्तसर सा रास्ता है।

इस्लिए मेरे दोस्तो, अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! हमे अपनी मेहनत के रूख़ को बदलना है, उम्मत अपनी मेहनत के रूख़ को बदले इसके लिए हमें कलिमे की दावत को ज़िन्दा करना है। कलिमे की दावत ज़िन्दा करने के लिए ईमान के हलक़े हर मस्जिद में लगाना हैं अल्लाह के ग़ैबी निज़ाम के तज़्किरे करना हैं, इस के लिए ख़ूब ऊँची-ऊँची दावत दो, आला ईमान "आमिनू कमा आमनन्नास" की दावत दो तो, इससे इन्शाअल्लाह उम्मत अपनी मेहनतों के रूख़ बदलेगी। तुम मजमे और माहौल के ऐतिबार से न बोलो, हर नबी बिगड़े ही माहौल में भेजा जाता था, वह आकर कलिमे की दावत से माहौल बनाते थे न कि माहौल के ऐतिबार से दावत पेश करते थे।

मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत को छोड़ देने की वजह से उम्मत में यह ग़लतफ़हमी पैदा हो गयी। उम्मत तो क्या ख़ुद काम करने वालों में यह बात पैदा हो गयी कि माहौल के एतिबार से या मजमे के एतिबार से दावत दी जाय, नहीं बल्कि हर किसी नबी ने कलिमे की दावत ही को पेश किया है बात का मानना और

Maktabe Ashraf

न मानना इसका ज़िम्मा नबी को नहीं दिया है, कलिमे की दावत ही से ख़ुद दावत देने वाले का यक़ीन बनेगा और माहौल बनेगा, हाँ ये दो ख़ूबियाँ हैं कलिमे की दावत की, यह ख़ास्सा है दावत का।

इसलिए मेरे दोस्तो! कलिमे की दावत को ज़िन्दा करके हमें उम्मत की मेहनतों के रूख़ को बदलना है कि हर ईमान वाला ईमान और आमाल की हक़ीक़त को पाने के लिए ईमान और आमाल की मेहनत करने वाला बन जाये।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि अभी तक जो मेहनत दावत की हो रही है वह तो नुबुव्वत वाली मेहनत को उम्मत में ज़िन्दा करने की मेहनत हो रही है, उम्मत पहले इस काम को समझ ले, जब यह दावत उम्मत के उमूम में आयेगी कि उम्मत के उमूम में ईमान के हलक़े, उम्मत के उमूम में आमाल की हक़ीक़त को हासिल करने की फ़िक्रें, तब अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त वे नुसरतें, वे बरकतें, वे रहमतें लायेंगे जो सहाबा के दौर में जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० की मेहनत पर, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने जो कुछ ज़ाहिर के ख़िलाफ़ उस वक़्त किया है, वह सब आज होगा। मेरे दोस्तो! इस वक़्त जो कुछ हो रहा है दुनिया में यह तो सिर्फ़ हज़रत फ़रमाते थे कि वे बरकतें हैं, जो जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० की बेअ्सत के पहले ज़ाहिर हो चुकी थीं। बकरी के थनों में दूध का आ जाना, यह बेअ्सत के पहले की बात है, ये तो वे बरकात हैं मेरे दोस्तो! बातिल का गिर जाना यानी

Maktabe Ashraf

अपनी जगह से हरकत में आ जाना और उनका खड़े-खड़े ज़मीन पर पलट जाना, ये सारी बरकतें आप की बेअ्सत से पहले आपकी पैदाइश के बाद की हैं।

अभी काम शुरू नहीं हुआ, जब काम शुरू होगा फिर वह होगा जो ख़न्दक़ में हुआ, फिर वह होगा जो सहाबा के साथ कैसर और क़िसरा के दरमियान हुआ।

लेकिन यह सबका सब याद रखियो अच्छी तरह अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को जब पकड़ेंगे जब ईमान वाले कलिमे की दावत पर जमा हो जायेंगे, क्यों?

इसलिए कि मेरे बुज़ुर्गो, अज़ीज़ो! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को हक़ की वजह से पकड़ते हैं, अल्लाह ने अपने सारे वादे बनी इसराईल के इस पर पूरे किये कि उन्होंने सब्र से काम लिया। सब्र का क्या मतलब कि हमें मारा जाता रहे और हम बर्दाश्त करते रहें। नहीं यह बात नहीं है कि सब्र इसको नहीं कहते, सब्र कहते हैं सबसे पहले अपनी ख़्वाहिश के मुक़ाबले में हुक्म को पूरा करना, यह है सब्र।

इसीलिए हुज़ूर सल्ल० ने रोज़े को सब्र कहा है कि रोज़ा सब्र है क्यों? इस लिए कि रोज़े ने इसको खाने से रोक दिया। इसलिए रोज़ा सब्र है और सब्र का बदला जन्नत है कि रोज़ेदार किसी दरवाज़े से जन्नत में दाख़िल हो जाये, हर दरवाज़े से पुकारा जायेगा।

इसलिए अर्ज़ यह है कि ईमान-ईमान की मेहनत से बनेगा। इस ईमान के मुक़ाबले पर जब बातिल आयेगा तो मारा जायेगा, हज़रत फ़रमाते थे कि आमाल से भी

Maktabe Ashraf

बातिल मग़लूब नहीं होगा कि हम यह चाहें कि हमारी नमाज़ से बातिल का मुक़ाबला हो जाये कि नहीं पहले कलिमे की दावत से यक़ीन बनेगा, फिर यक़ीन से नमाज़ ऐसी बनेगी कि यह नमाज़ ग़ैरों का मुक़ाबला कर ले, और इस नमाज़ के मुक़ाबले बातिल फ़ेल हो जाये।

अब तो भई बात ही कुछ से कुछ है, वरना हज़रत फ़रमाते थे कि बातिल अ़मल के मुक़ाबले नाकाम नहीं होगा क्योंकि उन्हें ख़बर है कि इन बिगड़े हुए यक़ीन से इसका अ़मल बनेगा ही नहीं तो बिगड़े हुए यक़ीन से हमारा बातिल कैसे मग़लूब हो जायेगा।

उन्हें मालूम है हमारे आमाल, हमारे अस्बाब, हमारी कमाइयाँ, हमारी चीज़ें जो ईमान वाले इस्तिमाल कर रहे हैं, इससे इनकी नमाज़ों में जान नहीं है जो सहाबा की नमाज़ में थी। हाँ वे अगर होते तो हम यक़ीनन उनके मुक़ाबले में नाकाम हो जाते, उन्हें भी ख़बर है कि हमारी नाकामी के क्या अस्बाब हैं, वरना तो मेरे बुज़ुर्गो दोस्तो! उस ज़माने में तो बातिल ख़ुद ही रूख़ फ़ेर कर चला जाता था मुक़ाबले की भी हिम्मत नहीं करता था। ईमान वालों से मुक़ाबला वे किया करते जिन्हें अक़्ल नहीं होती थी, वरना मुश्रिक ख़ुद कहते थे, हुरमजान ने ख़ुद कहा है सहाबा से कि जब से तुम्हारा रब तुम्हारे साथ हो गया जब से हम मग़लूब हो गये वरना पहले जब हम तुम एक से थे तो हम तुम पर ग़ालिब थे तुम्हारा ख़ून हम बहाते थे तुम्हारा माल हम लूटते थे, हम तुम पर ग़ालिब थे।

Maktabe Ashraf

कौन कह रहा है? हुरमजान नाम का मुश्रिक कि तुम हमारे गुलाम बन कर रहते थे, लेकिन जब से यह तुम्हारा रब तुम्हारे साथ हो गया तब से हम मग़लूब हो गये। यह एक मुश्रिक कह रहा है सहाबा से। इसलिए कि हक ग़ालिब रहेगा बातिल पर।

वजह क्या है मुक़ाबले की?

मुक़ाबले की वजह यह है कि उन्हें ख़बर है कि तुम्हारे आमाल इस क़ाबिल नहीं हैं जो उनका मुक़ाबला कर सकें क्योंकि बातिल को भी हक़ के ग़ालिब आ जाने के अस्बाब की ख़बर है, कि हक़ कब ग़ालिब आता है।

मेरे दोस्तो! दावत से ईमान बनाओ, अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को अ़मल के मुक़ाबले पर नहीं ईमान के मुक़ाबले पर नाकाम करेंगे इसे याद रखियो वरना बातिल अ़मल वालों के मुक़ाबले में कामयाब हो जायेगा क्योंकि अ़मल है पर अल्लाह के वादों का यक़ीन नहीं तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त बातिल को अपने वादों के मुताबिक़ कैसे मग़लूब करें।

देखो साफ़ बात है अ़मल है यक़ीन नहीं। आज उम्मत ने अ़मल सीखा यक़ीन नहीं सीखा इसलिए बावुजूद अ़मल के नाकाम हैं और बावुजूद आमाल के बातिल ग़ालिब है।

बातिल किसको कहें?

बातिल कहते हैं कि अल्लाह के अवामिर को जिन पर वादे हैं उन्हें यह कामयाबी का यक़ीनी सबब न समझे और दुनिया की शक्लों और नक़्शों को यह

अपना अस्बाब समझे यह बातिल ख़ुद हमारे अन्दर जब मौजूद है तो कैसे कामयाबी मिले बाहर के बातिल पर कि इसको हलाल तिजारत करने में नाकामी नज़र आ रही है, इसको अपने घर में हराम आलात न लाने में नाकामी नज़र आ रही है।

इसलिए मेरे दोस्तो, बुजुर्गो! इरादे करो निय्यतें करो कि इन्शाअल्लाह हमें दावत को मक़सद बना कर चलना है, और सारी उम्मत को इस पर लाना है, यह दावत की मेहनत हर उम्मती की ज़िम्मेदारी है, बग़ैर कलिमे की मेहनत के यक़ीन नहीं बनेंगे, यह सोचा करो हर वक़्त कि अल्लाह ने हमें कितनों की हिदायत का ज़रीया बनाया हुआ है, हुज़ूर सल्ल० ने एक-एक सहाबी को पूरे-पूरे क़बीले की हिदायत का ज़रीया बनाया है, एक सहाबी तुफ़ैल बिन उमर दौसी रज़ि० 80 घरानों को इस्लाम में लाने का ज़रीया बने।

इस उम्मत में अल्लाह ने इसकी इस्तिदाद रखी है क्योंकि अब कोई नबी नहीं आयेगा बल्कि नुबुव्वत वाली मेहनत ही अल्लाह ने एक एक उम्मती के हवाले कर दी है।

"कुन्तुम ख़ै-र उम्मतिन उख़्रिजत लिन्नासि"

लाम तख़्सीस का है कि तुम्हें ख़ास करके इसी काम के लिए भेजा है, कि इस उम्मत की नुबुव्वत वाली मेहनत के करने से क़ौमें इस्लाम में आयेंगी, अफ़राद नहीं बल्कि क़ौमें, इसकी अल्लाह ने इस उम्मत के अन्दर इस्तिदाद रखी है।

इसलिए मेरे दोस्तो-बुजुर्गो! अब तक कि गुज़री हुई

ज़िन्दगी पर इस्तिग़फ़ार करो कि हमने अब तक यह बात नहीं समझी कि हम इन्सानों की हिदायत का ज़रीया हैं, बड़ी जुर्म की बड़ी तौबा करने की बात है कि मैं आज तक अपने आपको ताजिर समझता रहा।

नहीं मैं तो नबी का उम्मती हूँ और बहैसियत उम्मती होने के मेरे ज़िम्मे नुबुव्वत वाला काम है, जितना इस राह में फिरेंगे और जितनी दावत देंगे अपना यक़ीन बनेगा और उम्मत सही यक़ीन और अमल पर आयेगी।

इसलिए अपना यक़ीन बनाने और सारे आलम के इन्सानों को सही यक़ीन पर लाने के लिए हमें कलिमें की दावत को मुसलमानों में ज़िन्दा करते हुए कलिमे की मेहनत को करना है अब इसके लिये अपनी मौजूद कुरबानियों से आगे बढ़ो और हर साल के चार-चार और छः-छः महीने की निय्यतें करो, इरादे करो, इसके लिए नक़द नाम लिखाओ।

Maktabe Ashraf

बयान

मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब कान्धलवी

तारीख़ : 14.08.2000

जगह : बंगले वाली मस्जिद, हज़रत निज़ामुद्दीन, नई दिल्ली-13

मेरे दोस्तो! अभी दावत की सतह गिरी हुई है मैं सच्ची अ़र्ज़ कर रहा हूँ मुझे किसी से शिक्वा नहीं है।

इसलिये कि जब तक हमारे दरमियान मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात नहीं रहेंगे मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि ख़ुदा की क़सम दावत की सतह बुलन्द नहीं होगी। सारे उ़लमा की किताबें अपनी जगह, मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात हमारे काम की सतह को आगे बढ़ायेंगे इसके अ़लावा कोई रास्ता नहीं। आप वक़्त का मुतालबा करें आप 8 घंटे का मुतालबा करें आप चार महीने छः महीने का मुतालबा करें तो तमाम का तमाम जब होगा जब हमें इस काम की ख़ाबर हो कि आख़िर इस काम से मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० क्या चाहते थे। तो बुनियादी बात मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो यह है कि हम लोगों में आपस के मुज़ाकरों में हज़रत के बयानात ज़्यादा से ज़्यादा आपस की मज्लिसों में आयें, यह सबसे पहली बात है। इसलिये कि यह यक़ीनी बात है कि जब दाई की दावत की सतह नीचे उतरती है तो मदऊ की सतह ख़त्म हो जाती है उसे तो जब मौत पर राज़ी करोगे तो वह बुख़ार पर राज़ी होगा। एक है नबी का

Maktabe Ashraf

उम्मत की सतह पर उतर कर दावत देना, एक है नबी का अपनी सतह पर रहकर दावत देना यह तो यक़ीनी बात है कि यह नुबुव्वत वाला काम है, मौलाना मुहम्मद इलयास रह० को मिल गया एक खोई हुई चीज़ मिल गयी उनको, "ऐसा नहीं है कि यहाँ से काम की इबतिदा है काम क़दीम है सारे दलाइल सारा तरीक़ा-ए- कार सौ फ़ीसद और तमाम का तमाम सहाबा किराम का है, तो जब यह नुबुव्वत वाला काम है तो नुबुव्वत वाली सतह चाहेगा, यह अ़वाम की सतह पर हरगिज़ नहीं आयेगा।

एक आम आदमी से आप सल्ल० फ़रमा रहे हैं कि तेरी नमाज़ नहीं हुई फ़िर से नमाज़ अदाकर यह बात एक आ़म आदमी से फ़रमायी है आप सल्ल० अबूबकर रज़ि और उमर रज़ि से नहीं फ़रमा रहे हैं एक आम आदमी ने नमाज़ अदा की। क्योंकि नबी अपनी वाली नमाज़ को उम्मती की नमाज़ से जोड़ रहे हैं। नबी अपनी वाली नमाज़ से उम्मत की नमाज़ को जोड़ेंगे कि इसकी नमाज़ मेरी सतह की है या नहीं है। है, तो ठीक है और अगर मेरी सतह पर इसकी नमाज़ नहीं है तो जा नमाज़ पढ़ तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। मेरे दोस्तो एक तो है हमारा उम्मत के ज़ौफ़ को देखकर अपनी दावत से नीचे उतर जाना। यह तो बिल्कुल नुक़्सान का रास्ता है। यानी काम ही नहीं है वह जिसमें दाई, मदऊ की सतह पर उतरे, ऐसा है जैसे ताजिर-ग्राहक की सतह पर उतर गया। ताजिर ग्राहक की सतह पर उतर गया अब इसकी तिजारत ख़त्म। ऐसे

Maktabe Ashraf

ही दाई-मदऊ की सतह पर उतर गया। इसकी दावत खत्म हो गयी अब क्या होगा कि उम्मत की सलाहियतें दुनिया पर लगेंगी। क्योंकि हम उस सतह की दावत नहीं दे रहे जिस सतह पर उम्मत अपनी मेहनतों के रूख़ बदले। तो हमारी बात की सतह तो दोस्तो बहुत ऊँची होनी चाहिए।

मैं इसलिये यह बात अर्ज़ कर रहा हूँ कि आप सब हज़रात अपने-अपने इलाक़े में काम को लेकर चलने वाले हैं। यह मुस्तक़िल सवाल है, कि हम अपने मज्में से क्या बात करें।

"मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० ईमानियात पर इतना बोलते थे, कि आदमी को अपने अन्दर का शिर्के ख़फ़ी नज़र आता था। कि यह मेरे अन्दर का शिर्क है" और अपने मजमों को आख़िरत के वादों पर उठाया। एक आदमी की सतह से ऊँची बात।

हम कर रहे हैं अवाम की सतह की बात, ताकि ये समझें। नहीं हमें बात करनी है इनकी सतह से ऊँची ताकि इनकी सतह बुलन्द हो। आवाज़ की तरफ़ वह मुतवज्जह होता है जिस तक आवाज़ कम पहुँच रही है। असल चीज़ की तरफ़ वे लागे मुतवज्जह होंगे, इसलिये कि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात देखकर अन्दाज़ा यह हुआ कि वे मजमे को अपनी सतह पर लाने की कोशिश में थे।

न कि मजमे की सतह पर उतरने के लिये कि मजमे की सतह पर उतर जाओ कि यह मजमा काम को खेल बना ले। जिस चीज़ की तरफ़ उम्मत को

लाना है अगर उस चीज़ की तरफ़ दावत न दी जायेगी तो उम्मत के अन्दर की सलाहियतें होते हुए भी बर्बाद हो ज़ायेंगी और ख़त्म हो जायेंगी। हमारे यहाँ इसरार नहीं है तर्ग़ीब है। लेकिन तर्ग़ीब उस आला सतह की है। जहाँ हमें पहुँचना है। और गुंजाइशें और सहूलतें ये दूसरों के लिये।

इनसे कहा "कूला लहू क़ौलन लय्यिनन" यह दूसरों के लिये।"

वला तनिया फ़ी ज़िक्री" जो काम को लेकर चल रहे मूसा और हारून अलै० इनके लिये "वला तनिया फ़ी ज़िक्री इन्नी मअकुम" कि बहुत सख़्त बात है यह कि मैं तुम्हें देख रहा और सुन रहा हूँ कि तुम ज़रा भी ग़फ़लत न करना मेरी याद में। और सहूलतें तो वे दूसरों के लिये हैं।

मेरे दोस्तो दूसरों के लिये सहूलतों का मतलब यह है कि जब कोई तबक़ा उठकर काम की तरफ़ आवे। तो आप उस तबक़े के लिये काम को आसान करें और जब वे काम पर आ जावे तो आप उसे काम की असल सतह बतावें। यह नहीं कि हम सब मिलकर काम की एक सतह तय कर लें, और उसी की दावत हो उसी की मेहनत हो और अवाम और ख़्वास आकर एक सतह पर रूक जायें यह नुक़्सान का रास्ता है। यह रास्ता हमारे नुक़्सान का रास्ता है। हमारी दावत का तक़ाज़ा यह है कि नबी अपनी सतह से दावत देते हैं। और मदऊ अपनी सतह से अमल करता है। तो बात की सतह बहुत ऊँची होगी और अमल की सतह हस्बे

Maktabe Ashraf

इस्तिदाद होगी। अमेली सतह होगी हस्बे इस्तिदाद और मुतालबा होगा बहुत ऊंचा। जैसे ताजिर का मुतालबा बहुत ऊँचा और ग्राहक की सतह बहुत नीची। वह उसके माल को अपनी सतह से ख़र्च कराना चाहता है ताजिर, इसमें ताजिर की कामयाबी है। इसी तरह हम इस बात पर ग़ौर करें कि हम अपने मज्मे को किस सतह पर ले कर चल रहे हैं। एक तो इस बात की मेरे दोस्तो कमी महसूस होती है कि हमारा उ़मूमी मजमा इस काम को नुबुव्वत वाला काम यक़ीन करके नहीं चल रहा। देखो मैं यह इसलिये अ़र्ज़ कर रहा हूँ कि हमारी हर मज्लिस में यह बात ज़रूर आनी चाहिए कि यह अम्बिया अ़लै० वाला काम है जो नबियों से नबियों में मुन्तक़िल होते-होते जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० तक और आपसे इस उ़म्मत के ज़िम्मे किया गया है। ताकि उम्मत इस काम में अपनी ज़िम्मेदारी के शऊ़र से चले, यह नहीं कि लोग चल रहे हैं तो हम भी चल रहे हैं। कि क्या वजह है आप हज़रात के क़ुरबानी देने की?

क्या वजह है अ़वाम को इस मेहनत पर लाने की?

और क्या वजह है कि इस पर इस्तिक़ामत हो?

क्या बसीरत हो अ़वाम को? एक साहब ने बयान किया यहाँ (बंगले वाली मस्जिद में) हज़रत के ज़माने में और जब तश्कील की मजमा खड़ा हो गया कि हम तैयार हैं। बयान बहुत ज़ोरदार, हज़रत ने उनसे पूछा कि क्या किया तूने उन्होंने कहा हज़रत इनको जमाअ़त में निकालना ही तो है, तो निकाल दिया सब तैयार हैं जाने के लिये तो हज़रत ने उनसे फ़रमाया कि तू

बहक गया वह मज्मा काम पर कायम रहेगा जो मजमा ख़ुद काम को काम समझकर कर उठा है। वरना मेरे दोस्तो गुज़रगाह है। मैं सच्ची अर्ज़ करूँ जब मैं किसी सूबे वालों से पूछता हूँ कि सालाना चार माह देने वाले कितने हैं कहते हैं कि नहीं हैं। हर साल चार माह देने वाले नहीं हैं। अगर निकलने वालों की तादाद देखेंगे तो उससे 5 गुना ज़्यादा होगी और काम में चलने वाले कम। क्योंकि हम निकलने वालों की तादाद से घर की तालीम का मस्जिद की तालीम का मश्वरों का मस्जिद के पाँच कामों का अन्दाज़ा इससे लेते हैं। कि इतना बड़ा मजमा निकला तो वह कहाँ गया। तो एक तो अपने मजमे को नुबुव्वत वाली बुनियाद पर उठाना और एक अपने मजमे को सिर्फ़ निकालना। कि नहीं मजमा किस बुनियाद पर उठा है, कि यह आदमी तब्लीग़ में जाने के लिये नाम क्यों लिखवा रहा है। क्या मक़सद है इसका तब्लीग़ में जाने का।

मैं तो ख़ुद लोगों के बयान सुन रहा हूँ उससे अन्दाज़ा यह हो रहा है कि हम अपने मजमे को दुनियावी हालात और परेशानियों से निकालने के लिये तब्लीग़ में भेज रहें।

मेरे दोस्तो! तो दुनिया का लालच देकर इस्लाम में ग़ैरों को लाया जाता है। अपनों को नहीं। हुज़ूर सल्ल०ने सहाबा को उठाया उख़्रवी वादों पर और ग़ैरों को उठाया दुनियावी वादों पर।

इसलिए हज़रत मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० के बयानात हर वक़्त हम अपने ज़हन में रखें। इसकी

आप हज़रात कोशिश फ़रमावें ताकि हमारी बात हमारी सतह से नीचे न उतरे और हमारी बात हमारे मौज़ू से न हटे। इस वक़्त इस चीज़ की शदीद ज़रूरत है। देखो कुर्बानियों की सतह तो हमारी बात की सतह से क़ायम होगी। दोस्तो! कुर्बानियों की जो सतह क़ायम होगी, अवाम की और ख़्वास की वह तो हमारी बात की सतह से क़ायम होगी, कि इस सतह की बात हो रही है मैं इस सतह पर पहुँच जाऊँ। लेकिन अगर काम को ले आये सहूलतों पर तब तो लोग आप से आकर मुतालबा करेंगे कि आप मुझे इजाज़त दे दीजिये कि मैं एक घंटा सुबह दे दिया करूँ और डेढ़ घंटा शाम को दे दिया करूँ यहाँ तक कि हम ख़ुद सोच में पड़ जायेंगे कि मस्जिद का काम इस तर्तीब पर कैसे आये कि हर आदमी हर काम करते हुए मस्जिद को वक़्त दे दिया करे। देखो हमें 8-8 घंटे की दावत ख़ूब जमकर देनी है। मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे। कि साल का चिल्ला महीने के 3 दिन हफ़्ते के दो गश्त और 2 तालीम यह तो ज़ाती ज़िन्दगी में दीन लाने के लिये है। अभी काम को लेकर चलमे वाला तबक़ा वह बेचारा इसी पर अटका हुआ है जिसने सारे आलम की ज़िम्मेदारी का ऐलान किया हुआ है, वह इस पर अटका हुआ है। ये तो वे हैं जो मुतालबा कर रहे हैं दूसरों से। इस काम को आगे बढ़ाने की क्या शक्लें हैं और इसके क्या अस्बाब हैं? इसका सबसे बड़ा सबब यह है कि दावत देने वाला अपनी सतह पर रहकर दावत दे और मदऊ जितना पेश करे उसे क़ुबूल कर ले। यह

Maktabe Ashraf

मिज़ाजे नुबुव्वत है इस काम में जैसे क़बीला-सक़ीफ़ वालों के साथ किया गया। और हम यह कर रहे हैं कि उसूल तो चलाते हैं नये लोगों पर और ख़ुद बेउसूलियाँ कर रहे हैं।

हालांकि कुरआन में यह है हुज़ूर सल्ल० को हिदायत कि "ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़सक व हरिंज़िलमुअ्मिनीन" कि नबी जी अपने आपको तक्लीफ़ में डालिये और इनको तग़ीब दीजिये तो आपकी तक्लीफ़ आपकी तग़ीब को मुअस्सिर बनावेगी। तो आपने जिसको दावत दी पूरी दी।

इसलिए मेरे दोस्तो, कुर्बानियाँ हमेशा याद रखें मुल्को के तकाज़े वह तबक़ा पूरा करेगा जिनकी अपने यहाँ की कुर्बानियों की सतह बुलन्द होगी। हम आसानी की दावत हरगिज़ नहीं देंगे-हरगिज़ नहीं देंगे हरगिज़ नहीं देंगे" इस आसानी ने काम की सतह बिल्कुल गिरा दी। कि तुम आसानी की दावत दो। नहीं जब दावत पूरे की देंगे तो जो आसानी का मुतालबा करने आयेगा उसे इजाज़त दे देंगे जैसे क़बीला सक़ीफ़ वालों के साथ हुआ। तो दावत और इजाज़त में बहुत फ़र्क़ है कि दावत तो पूरी है कि नबी की दावत पूरी है। अम्र-ए-जामे का क्या मतलब जैसे जुमे की नमाज़ या जमाअ़त की नमाज़ जो लोग इस काम में लगे हुए हैं उनके लिये यह काम अम्र-ए-जामे होने का क्या मतलब।

हुज़ूर सल्ल० के यहाँ एक अमला था जो आपके साथ चिपका हुआ था। क्योंकि जब अमला अमीर के

Maktabe Ashraf

साथ चिपका हुआ होगा तो तक़ाज़े पुरे होंगे। और अगर यह इजाज़तें ले लेकर जायेंगे तो इजाज़तों की मेहनत बहुत कमज़ोर होती है। ईमान वाले जब अम्र-ए जामे पर हों, तो इजाज़त के बग़ैर न जावें और जो इजाज़त ले कर जावें उनके लिये सब मिलकर इस्तिग़फ़ार करें। इस्तिग़फ़ार तो गुनाह होने पर किया जाता है। फिर ये तो इजाज़त लेकर जा रहे हैं इनके लिये इस्तिग़फ़ार क्यों? इसलिये कि जब यह काम अम्र-ए-जामे है, क्यों जा रहे हैं। उलमा सुनेंगे ना इस बात को तो कहेंगे कि क़िताल की आयत को यहाँ जोड़ दिया और सच्ची बात तो यह है कि क़िताल मौज़ू-ए-नुबुव्वत नहीं है। अगर क़िताल मौज़ू-ए-नुबुव्वत है नऊज़ुबिल्लाह तो इसका मतलब यह है कि, नबी जिनकी तरफ़ भेजे गये हैं उनको जहन्नम में पहुँचाने के लिये भेजे गये हैं। इस ज़माने में आमाल और क़िताल ही रह गये दावत दरमियान में से निकल गयी। अम्र-ए-जामे क़िताल नहीं है। अम्र-ए-जामे नबी के साथ जो जमाअत निकली है दीन सीखने और दीन सिखलाने के लिये गयी है यह दीन सीखने और दीन सिखलाने के लिये निकली है। अगर ज़रुरत पेश आजायेगी क़िताल की, तो क़िताल कर लेंगे, लेकिन जिसका दरजा जिज़्या के भी बाद है। इमाम बुख़ारी ने भी वे ग़ज़्वात बुख़ारी में लिखे हैं ग़ज़्वात के बाब में जिस में जमाअत काम कर के चली आई बग़ैर क़िताल किये।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे। इसे तुम लोग ख़ुद ही पढ़ लीजियो 'सवानेह के ख़त में

"छपा हुआ है। उस में यूँ लिखा है कि उम्मत इस काम को अहमियत इस लिये नहीं दे रही है कि उम्मत इसे कलिमा, नमाज़ सही करने की तहरीक समझ रही है हालांकि इस काम का मक़सद, दावत से अपने कलिमा, नमाज़ में नूर पैदा करना मक़सूद है। यह हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के सवानहे में छपा हुआ है। कि अम्र-ए-जामे का मतलब यह है कि एक उम्मत ऐसी हो जिसका काम "बुराई से रोंकना और भलाई का हुक्म देना हो" ये होंगे कामयाब।

तो यह अम्र-ए-जामे पर है। अम्र-ए-जामे से बग़ैर इजाज़त जाना तो बहुत नामुम्किन, इजाज़त ले कर जाने पर भी इस्तिग़फ़ार है। और आगे क़ुरआन में क्या है? कि जो अल्लाह की ज़ात का यक़ीन रखेंगे वे इजाज़त ले-लेकर नहीं जायेंगे। कि जिनका यक़ीन नहीं है अल्लाह के वादों पर इजाज़त ले-लेकर भागेंगे। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि जब तक तुम अपने घर से शादियों को और जनाज़ों को होता हुआ छोड़कर नहीं निकलोगे उस वक़्त तक तुम उम्मत को इस काम पर ला नहीं सकते। जो क़ुर्बानी देगा वह क़ुर्बानी की बात समझेगा। सहूलत वाले क़ुर्बानी की बात को नहीं समझेंगे। सहूलत वालों के तो इश्कालात होंगे। सहूलत वाले क़ुर्बानी की बातों को इश्तिआल कहते हैं। मैं सच्ची अर्ज़ कर रहा हूँ आप हज़रात से। सुनकर कह रहा हूँ। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे इश्तिआल और तर्ग़ीब में फ़र्क़ यह है, कि इश्तिआल फ़साद के लिये होता है और तरग़ीब इस्लाह

के लिये होती है।

"मैं ने एक साहब को मौलाना मौ० यूसुफ़ सा० रह० का एक बयान सुनाया। कहने लगे यह बयान तो किसी को नहीं सुनाना चाहिये, मैं ने पूछा क्यों? कहने लगे कि इस में तो अजीब बात है, तो मैं ने कहा कि इसी लिये तो सुना रहा हुँ। फिर अगर हम देखें मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात को तो वह बात हमारे बयानात में नहीं। हर एक अपनी-अपनी, मुझे तो हैरत इस पर है कि लोग मुतालआ कर-कर के बयानात कर रहे हैं। अख़्बारात तक में हमारे बयानात आ रहे हैं दिन पर दिन हम अपने मौज़ू से हटते ही जा रहे हैं।

मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गो, यह काम वज़ीफ़ा नहीं है, अगली बात यह कि यह काम अमल नहीं है और यह काम सवाब के लिये नहीं है। यह तो मौऊद है मक़्सूद नहीं है। मक़्सूद तो अल्लाह की रज़ा है और उस अल्लाह की रज़ा के लिये मेहनत है। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे कि हमें इस काम में अल्लाह के वादों की निय्यत नहीं करना है बल्कि अल्लाह के वादों का यक़ीम करना है। इस लिये कि काम में अल्लाह के वादों का यक़ीन करने वाला एहतिसाब पर है, और अल्लाह के वादों की निय्यत करने वाला अग़राज़ पर है। और एहतिसाब हर अमल के साथ लाज़िम है।

आप हज़रात वे हैं। जो अपने यहां काम को लेकर चल रहे हैं। मेरी दरख़्वास्त है कि आप हज़रात अपने

Maktabe Ashraf

बयानात की सतह को बुलंद करें। आला ईमान आला कुर्बानियां "आमिनू कमा आमतन्नासु" क़यामत तक के लिये ऐलान है क़यामत तक आने वाले इनसानों के लिये कि ईमाने सहाबा ही मक़सूद है हम मजमे के लिहाज़ से न बोलें, हम तो अपने एतिबार से बोलें कुबूल करना अल्लाह के हाथ में है। "इन्न-क लतह्दी इला सिरातिल मुस्तक़ीम" नबी जी आप सीधे रास्ते की तरफ़ रहबरी करते हैं "इन्न-क ला तहदी मन अह्बब्-त" कि नबी जी आप हिदायत नहीं दे सकते जिसे चीहें तो हम अपनी दावत की सतह को बुलंद करें। और आला कुरबानियों की दावत दें। ताकि काम हमारा आगे बढ़े। चाहे वह मस्जिद का काम हो चाहे वह सूबों के तक़ाज़े हों और चाहे वे मुल्कों के तक़ाज़े हों। जितनी आला दावत होगी, उतनी ही सलाहियतें ठिकाने लगेंगी।

6 नम्बर मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के छपे हैं "अलफ़ुर्क़ान" में, आप सब उसको देखें। मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० फ़रमाते थे, कि आप सल्ल० ने सहाबा पर दीन सिखलाने से ज्यादा मेहनत दीन की मेहनत सिखलाने पर की है। दावत दीन की बक़ा का सबब है दावत यक़ीन की तब्दीली और माहौल का सबब है।

इसमें कोई शक नहीं कि बात जब उँची सतह की होगी तो मजमा ज़रा सा करवटें लेगा लेकिन देखो ज़हनी सतह सब की बराबर नहीं है हमारी बात आला सतह की होगी सब अपने अपने ज़हन की सतह से

Maktabe Ashraf

उस बात को लेंगे। फिर हज़ार में बात करेंगे, तो आपको सौ आदमी मिलेंगे। हर दाना नहीं उगा करता, काश्तकार ने जितने दाने डाले सब ही उगें, ऐसा नही होता, हर दाना नहीं उगा करता आप तो अपने मजमे से उँची सतह की बात करेंगे, तो जो कुर्बानियों पर आवेंगे वे दुसरों के लाने का ज़रीया बनेंगे। इसलिये हमारी मसाजिद में जों मेहनत है इसकी भी सतह आगे बढ़े इसके लिए 8-8 घंटे की दावत ख़ूब जमकर दीजिये, हाँ यह तयशुदा चीज़ है। दाई घंटे कम से कम हैं। कोई ख़ुद अगर 5 मिनट भी देगा तो कुबूल कर लेंगे। देखो जितने चाहें हम मुज़ाकरे मस्जिद वार जमाअ़त के करलें और जितना चाहे हम इस्तिख़फ़ाफ़ करलें। कुर्बानी की सतह बढ़ाये बग़ैर यह अ़मल में नहीं आ सकती और दावत की सतह बढ़ाये बग़ैर यह कुर्बानी वुजूद में नहीं आ सकती।

मौलाना मुहम्मद इल्यास सा० रह० जो बात किसी फ़र्द से या किसी जमाअ़त से करते थे! उनसे फ़रमाते थे कि तुम इसी तरह दावत देना जैसे मैने तुम्हें दावत दी है। मेरे दोस्तो! एक तो है हमारा आप लोगों से बात करना, एक है हमारे अ़मले का बात करना फिर मेरा अ़मला जिसको दावत दे रहा हो आगे उस बात को चलावे तब तो बात आगे बढ़ेगी! यानी हम उम्मत को आमाल पर ला रहे हैं या दावत पर ला रहे हैं! मैं तो यह महसूस कर रहा हूँ कि हम अपनी सारी मेहनत से उम्मत को आमाल पर ला रहे हैं। नहीं उम्मत को दावत पर ले आओ अ़मल पर ख़ुद आ

Maktabe Ashraf

जावेगी! जिसको अमल पर ले आये वह दावत पर न आवेगी जिसको दावत पर ले आये वह अमल पर आ जायेगी मौलाना मुहम्मद इल्यास सा० रह० फ़रमाते थे जब उम्मत से दावत निकली तो उम्मत में से दीन निकला। कि नबी आये दावत आयी दीन आया, नबी गये दावत गयी दीन गया। मैं सब देखता रहता हूँ, सुनता रहता हूँ। सारी तर्गीब अमल की, अमल की अमल की। हैदराबाद वालों से मैं ने कहा कि अल्लाह के रास्ते में निकल कर एक नमाज़ पर 7 लाख गुना और 49 करोड़ गुना अज्र है।

मैं ने कहा हमारा मजमा यूँ समझ रहा है और अल्लाह माफ़ फ़रमाये बस हमारा पुराना मजमा भी यही समझ रहा है। कि इससे आमाल के फ़ज़ाइल बताये जा रहे हैं हालांकि इससे आमाल के फ़ज़ाइल नहीं बताये जा रहे हैं बल्कि इससे इस रास्ते के फ़ज़ाइल बताये जा रहे हैं। आप हज़रात मौलना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० के बयानात देखें उनका मुतालआ हो ताकि हमारे बयानात की सतह बुलन्द हो। उँची-उँची दावत दो और उँचे-उँचे अज़ाइम कराओ।

अर्ज़ यह करना है कि कुर्बानियाँ बढ़ा लो सब कुछ बन जायेगा अल्लाह तआला कमी-कोताही माफ़ कर देगा। लेकिन इसमें मेरे दोस्तो जो नागवारी पेश आवे बर्दाश्त कर लो और अपने आप को मुकल्लफ़ करो कि अपनी ज़ात को मुकल्लफ़ करेंगे हम। जो अपनी ज़ात को मुकल्लफ़ करेगा, अल्लाह पाक उसको नवाज़ेंगे। जो मेरे दोस्तो कुर्बानी में आगे बढ़ते हैं उन्हें

Maktabe Ashraf

अल्लाह का कुर्ब मिलता है। जो कुर्बानी में पीछे होंगे वे कौम में पीछे कर दिये जावेंगे।

और ऐसे आज़ार पेश आवेंगे, जो इन्हें ख़ुद ही पीछे घसीट लेंगे। एसा भी नहीं कि कोई इन्हें पीछे करने के लिये हाथ लगावे। ऐसे हालात ऐसे अस्बाब अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमावे, पेश आ जाते हैं कि आदमी उस में आहिस्ता आहिस्ता पीछे हो जाता है। फ़रमाया कुर्बानियों में नागवारियों में जो गुज़रेगा इस रास्ते से, अल्लाह तआला उसे कुर्ब देंगे, नवाज़ेंगे उसे। तो इस रास्ते की नागवारी को बर्दाश्त करो और कुरबानी की सतह को बढ़ाओ। कुरबानी की सतह बढ़ाना किसे कहते हैं? यूँ कहें कि कुरबानी की सतह बढ़ाना उसे कहते हैं। कि हर काम करने वाला यह देखे, मैं किस सतह पर हूँ। मैं किस सतह पर चल रहा हूँ। जो जिस सतह पर है, उस सतह से आगे वह बढ़ेगा, जिस की निगाह अपनी कोताहियों पर होगी, वह कुर्बानी में आगे बढ़ेगा। यह इस काम का उसूल है। जिसकी निगाह अपनी कुर्बानियों पर होगी, उस के अन्दर फ़ख्र पैदा होगा और फ़ख्र जो है, इसके अन्दर किब्र लावेगा फिर वह अपना मुकाम चाहेगा, इसलिये कभी अपनी कुर्बानियों पर निगाह ना रखो। बल्कि अपनी कोताहियों पर निगाह रखें, इससे इस्लाह भी होती रहेगी और तरक़्क़ी भी होती रहेगी। तरबिय्यत भी और तरक़्क़ी भी, कोताहियों पर निगाह रखने में, और कुरबानी पर निगाह रखने में तकब्बुर आवेगा। हम हर चीज अपनी ज़ात के लिये मुकल्लफ़ कर लें तो यह चीज़ हमें आगे बढ़ावेगी।

Maktabe Ashraf

उसी आदमी की तर्ग़ीब मुअस्सिर होगी जो तक्लीफ़ उठावेगा। काम करने वालों का नागवारियाँ बर्दाश्त करना और तक्लीफ़ उठाना यह इनकी तरग़ीब को मुअस्सिर बनावेगा और अगर उसका उल्टा हो गया कि तक्लीफ़ दुसरों के लिये तो हमारी बात में तासीर नहीं रहेगी। मेरे दोस्तो बुज़ुर्गो! हमें अब अपनी कुर्बानियों को बढ़ाना है। देखो दो बार बच्चे की पिटाई होती है एक स्कूल में वहाँ स्कूल-में मास्टर मारेंगे कि स्कूल देर में क्यों आये, और घर पर अब्बा मारेंगे की इत्नी देर हो गई स्कूल क्यों नहीं गये। तो मेरे दोस्तो एक कुरबानी है इस काम में आने के लिये, और एक कुरबानी है घर से निकलने की, अब तक़ाज़े मुलकों के हैं। उस के इरादे करो निय्यतें करो, यह साल का चिल्ला महीने के तीन दिन हफ़्ते के दो गश्त रोज़ के कम से कम ढाई घंटे इसको तो मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि यह तो अपनी ज़ाती ज़िंदगी में दीन लाने के लिए है।

मेरा तो आज यह जी चाह रहा था कि आप हज़रात को मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ स० रह० के सिर्फ़ 6 नम्बर सुनाता जो अलफ़ुरक़ान में छपे हुये हैं, लेकिन आप हज़रात से दरख़्वास्त यह है कि अलफ़ुरक़ान में मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह० की जो हिदायतें छपी हुई हैं, हज़रत जी नम्बर सन 1965 का है, उसे आप हज़रात बार-बार, बार-बार पढ़ें। मैं साफ़ बात अर्ज़ करूँ आप से, उसमें आपको यह मिलेगा, कि मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ सा० रह०, ने गश्त का उन्वान नमाज़ को नहीं

क़रार दिया' बल्कि गश्त का उ़न्वान दावत को क़रार दिया है। फिर इबादत को भी गश्त का उ़न्वान नहीं क़रार दिया, गश्त का उ़न्वान उस में साफ़ आप देखेंगे कि गश्त का उ़न्वान दावत को क़रार दिया, और यूँ फ़रमाया अगर ज़रुरत महसूस करो तो नमाज़ को बहाना बना लो, क्योंकि नमाज़ का मुसलमान इन्कार नहीं करेगा, इसे पढ़ो। अलफ़ुरक़ान में छपा हुआ है। मैं ने तो बाक़ायदा लखनऊ ख़त लिखकर मंगवाया है वह आप हज़रात के पास होना चाहिये, उसमें बहुत हिदायात हैं, और बहुत वाज़ेह हिदायती ख़त है, जमाअ़तों के नाम उस में जो हिदायात देखोगे तो काम आसान होगा, और अगर सवालात उठाओगे तो सवाल का दीन बहुत मुश्किल होता है, सहाबा फ़रमाते हैं, कि हमें हुज़ूर सल्ल० ने कस्रते सवाल से रोका है। ये सवाल काम को मुश्किल बनावेंगे, मस्जिद वार जमाअ़त का मुज़ाकरा यह इतना आसान काम है, लेकिन यह काम आसान तब है जब इस के लिये वक़्त फ़ारिग़ हो। अब दावत की ज़िम्मेदारी को समझो और क़ुरबानियाँ बढ़ाओ, हर साल चार-चार महीने की निय्यतें करो।

Maktabe Ashraf